अंक - प्रथम

वर्ष - 2016

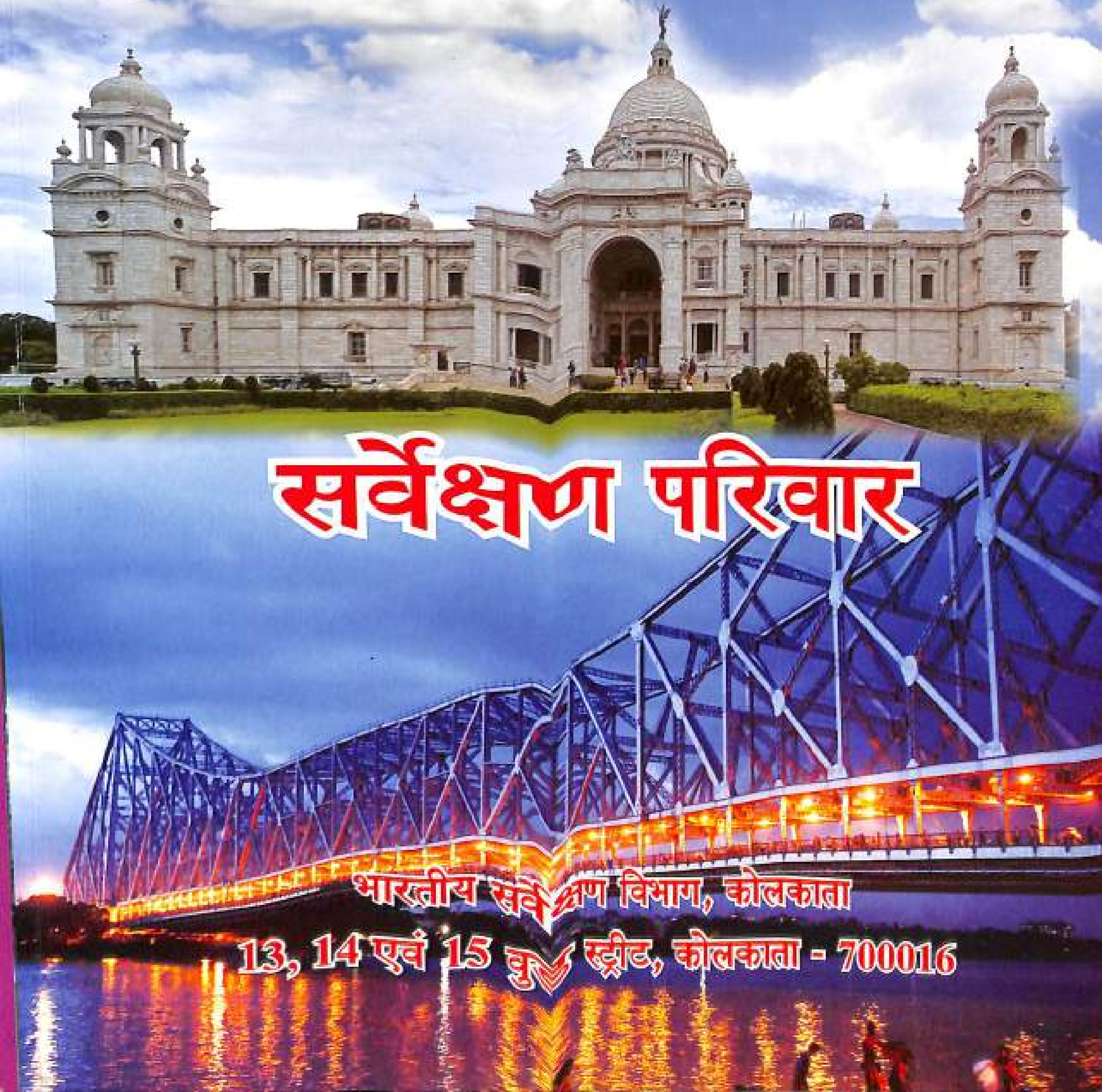

सर्वेक्षण परिवार

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

13, 14 एवं 15 वुड स्ट्रीट, कोलकाता - 700016

सर्वेक्षण परिवार

अंक - प्रथम वर्ष - 2016

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
कोलकाता

**** वन्दे मातरम् ****

वन्दे मातरम्
सुजलाम् सुफलां मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलाम् मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्सनां पुलकितयामिनीम् फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ।
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्, सुखदां वरदां मातरम् ।
वन्दे मातरम्...

सप्तकोटिकण्ठ-कलकल निनादकराले
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृत खरकरवाले
केन मा एत बले अबला ।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं, रिपुदलवारिणीं मातरम् ।
वन्दे मातरम्...

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म ।
त्वम ही प्राण शरीरे ।।
बाहुते तुमि मा शक्ति, हृदये तुमि मा भक्ति ।
तोमारि प्रतिमा गाड़ि मन्दिरे मन्दिरे ।।

त्वम् ही दुर्गा दशप्रहरण धारिणीं
कमला कमल-दल-विहारिणीं
वाणी विद्यादायिनीं नमामि त्वां
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम् ।
वन्दे मातरम् ।।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्
वन्दे मातरम्...

("आनन्दमठ" से साभार)

*****

डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव
Dr. SWARNA SUBBA RAO

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37,
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No. - 37,
Dehradun-248001, (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता स्थित पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र एवम्, पूर्वी मुद्रण वर्ग संयुक्त रूप से गृह पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

मैं आशा करता हूं कि प्रकाशित विभिन्न लेख/कविताएं/संस्मरण ज्ञानवर्धक होगें एवम् राजभाषा हिंदी संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारियों का समावेश होगा।

संयुक्त प्रयास से पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी तरफ से हार्दिक बधाई एवम् शुभकामनाएं।

(डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel : 00-91-135-2744268 / 2747051-58 Extn. 4350 E-Mail : sgi.soi@gov.in Fax: 00-91-135-2744268 / 2744064

राष्ट्र क्री सेवा में 249 वर्षों से अधिक
OVER 249 YEARS IN THE SERVICE TO THE NATION
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष / Telephone :– 033-2283-3376
कार्यालय / Office :– 2287-5732/33/34 &
2287-2155 (EPBX)
प्रतिकृति / Fax :– 033-2280-0196
ई-मेल / e-mail :– zone.east.soi@gov.in

अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
Office of the
Additional Surveyor General
पूर्वी क्षेत्र, EASTERN ZONE
15 वुड स्ट्रीट, 15 WOOD STREET
कोलकाता-16, KOLKATA–700 016.(W.B.)

संदेश

यह हर्ष की बात है की भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता स्थित पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र एवम् पूर्वी मुद्रण वर्ग के अधिकारियों, कर्मचारियों के संयुक्त रचनात्मक प्रयास से गृह पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार (प्रथम अंक)' संयुक्त रूप से प्रकाशित करने जा रहे हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्येश्य राजभाषा हिन्दी में लेखन को बढ़ावा एवम् मंच प्रदान करना है। इस अंक में राजभाषा हिन्दी, विभागीय ज्ञानवर्धक जानकारियां, रचनाएं, कविताएं एवम् संस्मरण का बहुमूल्य समावेश है। इस पत्रिका के माध्यम से मैं निदेशालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील करना चाहूंगा कि वे हिन्दी में स्वयं भी काम करें तथा दूसरों को प्रोत्साहित करें। मुझे गर्व है कि अधिकारियों और कर्मचारियों ने व्यस्तताओं के बावजूद रचनाएं प्रस्तुत की। राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवम् सम्मान में संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया तथा प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

संयुक्त प्रयास से पत्रिका का सफल प्रकाशन एवम् हिन्दी पखवाड़ा से सम्बंधित अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवम् शुभकामनाएं।

(संजय कुमार)
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र व
निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष/Telephone:0135-2748025
फैक्स/Fax:0135-2743331
E-Mail/ई-मेल : zone.ptg.soi@gov.in

अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय/**Office of the Additional Surveyor Generl**
मुद्रण क्षेत्र/**Printing Zone**
महासर्वेक्षक कार्यालय/Office of Surveyor General of India
हाथीबडकला एस्टेट/Hathibarkala Estate
देहरादून/Dehra Dun-248 001
उत्तराखण्ड/UTTARAKHAND

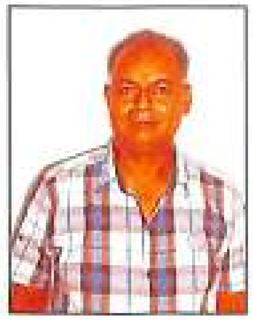

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हो रही है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता स्थित पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र एवम्, पूर्वी मुद्रण वर्ग संयुक्त रूप से गृह पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन से जहां एक और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलता है वहीं साथ ही अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखन अभिरुचियों को उजागर करने हेतु एक माध्यम भी मिलता है।

मैं आशा करता हूं कि इस अंक में अलग-अलग विषयों पर लिखी गई रचनाएं, कविताएं, संस्मरण और विभागीय ज्ञानवर्धक लेख राजभाषा के प्रति समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

संयुक्त प्रयास से पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं इस अंक के लेखकों और सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूं।

एस. बी. शर्मा

(एस. बी. शर्मा)
अपर महासर्वेक्षक
मुद्रण क्षेत्र, देहरादून

आशीष कौशल
निदेशक
ASHISH KAUSHAL
DIRECTOR

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
पूर्वी मुद्रण वर्ग
14 वुड स्ट्रीट,
कोलकाता-700016(प०बं०)
SURVEY OF INDIA
EASTERN PRINT GROUP,
14 WOOD STREET,
KOLKATA-700016 (W.B)

संदेश

यह गौरव एवम् प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता स्थित पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र एवम् पूर्वी मुद्रण वर्ग के सामूहिक प्रयास से गृह पत्रिका ''सर्वेक्षण परिवार'' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में कविता, लेख, संस्मरण इत्यादि के माध्यम से अधिकारियों व कर्मचारियों की लेखन रूचि एवम् भावनाओं को प्रकट करने का अवसर मिला है। राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना तथा सरकारी काम-काज में सरल रूप में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा कर्तव्य है।

इस अंक में विभिन्न विषयों पर लिखी गयी रचनाएं, कविताएं, संस्मरण एवम् विभागीय जानकारियों का वृहद् समावेश हुआ है। व्यस्तताओं के बावजूद संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा रहा है जो कि कार्यालय के 'ग' क्षेत्र में होने के लिहाज से अति आवश्यक व प्रशंसनीय है।

संयुक्त प्रयास से पत्रिका के सफल प्रकाशन एवम् हिन्दी पखवाड़ा से जुड़े हुए समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवम् शुभकामनाएं देता हूं व आशा करता हूं कि आने वाले वर्षों में पत्रिका का प्रकाशन इसी प्रकार अनवरत जारी रहेगा।

(आशीष कौशल)
निदेशक
पूर्वी मुद्रण वर्ग

सर्वेक्षण परिवार

अंक : प्रथम वर्ष : 2016

संरक्षक
श्री संजय कुमार
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

मुख्य सम्पादक
श्री आशीष कौशल
निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग

संयोजक
श्री हंसराज सोनकर
प्रबन्धक (वरिष्ठ), पूर्वी मुद्रण वर्ग

टंकण एवम् सम्पादन
श्री देव नारायण सिंह, अभिलेखपाल डिविजन-।
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता
श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता
श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी, कोलकाता

मुद्रण
श्री अग्नि कुमार दत्ता, प्रबन्धक (कनिष्ठ)
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता
श्री सुशांत धर राय, कर्मशाला प्रबन्धक
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता
श्री समीर गांगुली, सहायक प्रबन्धक
पूर्वी मुद्रण वर्ग, कोलकाता

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है ।

पूर्वी मुद्रण वर्ग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता द्वारा मुद्रित

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचनाएं	रचनाकार/प्रस्तुतकर्ता	पृष्ठ सं.
01	प्रथम प्रोडक्टिव फील्ड का अनुभव	श्री आशीष कौशल	17
02	अफसरशाही	श्री के. पी. मिश्रा	21
03	अच्छे दिन आएंगे ?	श्री शुभेश कुमार	22
04	आत्मसम्मान	श्री रूप कुमार दास	24
05	आलसी बेटा	श्री के. पी. मिश्रा	25
06	आहार चेतना – मानवीय, धार्मिक एवं वैज्ञानिक पक्ष	श्री शुभेश कुमार	26
07	उचित सलाह	श्री एस के ढाली	29
08	एक सुंदर सोच	श्रीमती सुश्मिता देव	30
09	कभी सुबह तो होगी	श्री शुभेश कुमार	31
10	कयामत	चौधरी मोहम्मद आरिफ	32
11	गुरू की वाणी	श्री शिवेश कुमार	33
12	घर कैसा हो	श्री रामकृष्ण मोरे	34
13	चेतना	श्री आशुतोष चक्रवर्ती	36
14	चार का महत्व , अजीबोगरीब दुनियां	श्री के. पी. मिश्रा	37
15	जिन्दगी बदलेंगे चाणक्य के सुविचार	कु. एन. देबमणि	38
16	धर्म है	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	39
17	नारी का महत्व	श्री देव नारायण सिंह	40
18	नारी का सफर	श्रीमती सीमा मित्रा	41
19	नीति की बातें	श्री के. पी. मिश्रा	42
20	पिता	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	43
21	प्रेरक	श्री अरिन कुमार दत्ता	44
22	पिता	श्री एस. के. तपादार	46
23	बायोमेट्रिक अटेन्डेन्स सिस्टम	श्री शुभेश कुमार	47
24	मेरा नया बचपन	श्री ओम प्रकाश रॉय	48
25	मैं चाहता हूं	श्री नव कुमार पाल	50
26	माँ , निश्चय	सुश्री दीतिप्रिया गांगुली	51
27	मुझको सरकार बनाने दो	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	52
28	योग का महत्व	श्री हंसराज सोनकर	53
29	रिश्ता–नाता	श्री तारेश्वर दास	54
30	सुःख–दुःख	श्री शुभेश कुमार	55
31	सुविचार	श्री रामकृष्ण मोरे	56
32	स्वच्छ भारत गढ़े	श्री शांति दास	57
33	सर्वे टीम से जुड़ी छोटी घटनाएं	श्री सुदीप्त कांजीलाल	58
34	हमारे देश के गॉव और शहरों के असली नाम	श्री देव नारायण सिंह	59
35	कार्यालयीन हिन्दी के वाक्य सांचे	श्री आशीष कौशल	60
36	राजभाषा कार्यान्वयन सम्बंधी जांच बिन्दु	श्री हंसराज सोनकर	62
37	भारतीय सर्वेक्षण विभाग – एक संक्षिप्त परिचय	श्री ओम प्रकाश रॉय	64
38	विनम्रता से लाभ, वचनामृत	श्री के. पी. मिश्रा	66

*****

प्रथम प्रोडक्टिव फील्ड का अनुभव : संस्मरण

श्री आशीष कौशल
निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग

मैंने भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सर्वेक्षण प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद जो कि अब भारतीय मानचित्रण एवं सर्वेक्षण संस्थान के नाम से जाना जाता है, में तीन अगस्त 2000 को उप अधीक्षक सर्वेक्षक के पद पर ज्वाइन किया था. लगभग दो वर्ष और दो माह तक सर्वेक्षण की विभिन्न विधाओं मे कार्यालयीन व क्षेत्रीय प्रशिक्षण के उपरांत मेरा स्थानांतरण पूर्ववर्ती पूर्वोत्तर सर्किल, शिलांग कर दिया गया जहाँ मैंने 22 अक्टूबर 2002 को ज्वाइन किया. वहाँ पहुंचने पर मुझें बालपकरम राष्ट्रीय उद्यान के सर्वेक्षण का कार्य सौंपा गया. बालपकरम राष्ट्रीय उद्यान मेघालय राज्य की गारो पर्वत श्रृंखला के सुदूर दक्षिण मे स्थित एक अति-सुन्दर व रमणीय स्थल है व इसका जिला मुख्यालय बाघमारा है.

तत्काल ही मैंने सौंपे गये कार्य की तैयारी प्रारंभ कर दी. इस कार्य हेतु मुझे सात खलासी व एक अधिकारी सर्वेक्षक की टीम दी गयी. मै अपनी टीम के साथ एक ट्रक-407 व जीप से दिसंबर माह के अंतिम सप्ताह मै रवाना हुआ. उसी दिन रात्रि को हम बाघमारा पहुँच गये. सर्किट हाउस पहुँच कर मैंने वहां के जिलाधीश महोदय से दूरभाष पर वार्ता कर दो कक्ष देने व परिसर में अन्य स्टाफ को रुकने की अनुमति प्रदान करने का अनुरोध किया. उनके द्वारा तत्काल ही इसकी अनुमति दे दी गयी. हमारी मंजिल अभी 62 किलोमीटर दूर थी परन्तु रास्ता अधिक उबड़-खाबड़ होने के कारण रात्रि मे निर्णय लिया गया की अगले दिन प्रातःकाल 7 बजे तक यहां से निकल जाना है ताकि वहां दोपहर तक पहुंच जाये.

तदनुसार खलासी व अन्य कर्मचारी ट्रक द्वारा 7 बजे के पहले ही निकल गये. मै व श्री डी०एस० मैहर, अधि० सर्वे० बस जीप मे बैठने ही वाले थे कि वहां सर्किट हाउस मे रुके एक अधिकारी हमारे पास आये और पूछा कि आप लोग कहां जा रहे है. उनके बताने पर की वह इस जिले के एस०डी०एम० है, संक्षेप मे उन्हें हमनें अपना उद्देश्य बताया. सुनकर उन्होंने कहा की मेरी सलाह है की आप प्रस्थान से पूर्व एक बार जिलाधीश महोदय से अवश्य मिल ले. मैंने सोचा मिलने मे क्या नुकसान है, कभी जरुरत भी पड़ सकती है और साथ ही सर्किट हाउस मे कक्ष देने का भी शुक्रिया अदा कर दूंगा. यह सोचकर मैं व श्री डी० एस० मैहर उनके मिलने निवास स्थल गये क्योंकि रविवार होने के कारण कार्यालय बंद था.

जिलाधीश महोदय हमसे मिले व दोपहर में एक बैठक रखी जिसमें हमारे अतिरिक्त वन-विभाग, प्रशासन व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों को आमंत्रित किया गया. बैठक मे सभी से चर्चा के उपरांत उन्होंने निर्णय लिया की राज्य में अप्रैल माह में होने वाले आगामी विधान सभा चुनाव व

बांग्लादेश से लगी सीमा पर कुछ समस्या होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से प्रशासन आपको सर्वेक्षण कार्य करने की अनुमति नहीं दे सकता है फिर भी यदि आप जाना चाहते है तो विभागीय जिम्मेदारी पर जा सकते है. तत्काल ही जिला प्रशासन द्वारा वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली को जारी पत्र जिसकी प्रतिलिपि मुझे भी दी गयी थी, को निदेशक, पूर्वोत्तर सर्किल को आगामी निर्देश के लिये भेज दिया.

लगभग सात दिनों के उपरांत निदेशक कार्यालय से पत्र के माध्यम से निर्देश मिला की मुझे control work हेतु कायिंग, अरुणाचल प्रदेश के लिये प्रस्थान करना है व श्री डी०एस० मैहर, अधि० सर्वे०. को मुख्यालय में रिपोर्ट करना हैं. अतः अगले ही दिन मै अपनी टीम के साथ ट्रक से गंतव्य स्थान के लिये रवाना हो गया जो की लगभग 1,100 किलोमीटर दूर था और श्री डी०एस० मैहर, अधि० सर्वे०. जीप से शिलांग चले गये . तीन दिनो की थका देने वाली यात्रा के उपरांत में सायं 6 बजे कायिंग पहुंचा. लगातार तीन दिनों तक ट्रक से यात्रा करने के कारण ऐसा लग रहा था कि अभी भी में ट्रक मे ही यात्रा कर रहा हूँ. रात हो चुकी थी और में भी काफी थक चुका था. अतः रात मेनें वहाँ पहले से ही कार्य कर रहे श्री अमूल्य शंकर, अधि० सर्वे० के तम्बू में गुजारी. शिविर मे 2 पटल चित्रक व कई खलासी भी मौजूद थे.

कायिंग अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम सियांग जिले में स्थित हैं जिसका जिला मुख्यालय अलोंग हैं. अलोंग कायिंग से लगभग 65 किलोमीटर दूर हैं. वाहन में डीजल डलाना हो अथवा पत्र को स्पीड पोस्ट/फैक्स करना हो या फ़ोन करना हो तो अलोंग आना पड़ता था. भारत के पूर्वी भाग में होने के कारण वहाँ सुबह जल्दी हो जाती है. अगले दिन प्रातः उठा तो वहाँ के प्राकृतिक नज़ारे को देखता ही रह गया. अत्यंत ही सुन्दर व मनोरम दृश्य था. रात भर बारिश होती रही लेकिन सुबह आसमान साफ़ हो चुका था व हल्की धूप निकल आयी थी. श्री अमूल्य शंकर, अधि० सर्वे० ने मुझें किये जा रहे कार्य के बारे मे बताया व वह उपकरण इत्यादि सौप कर पासीघाट चले गये. कायिंग में सेटेलाईट फ़ोन तो था लेकिन बहुत महंगा था और उसकी एक दिन पहले एडवांस बुकिंग करनी पड़ती थी फिर दूसरे दिन बात करने के लिये लाइन लगती थी.

मुझें कायिंग से लगभग 15 किलोमीटर दूर NHPC द्वारा चिन्हित बांध स्थल के मध्य में बह रही नदी के दोनों ओर EDM उपकरण की सहायता से heights देनी थी. उन बिंदुओ के निर्देशांको को पटल-चित्रकों को 1:500 पैमाने की PT पर plot करके अन्य डिटेल्स को लेकर कंटूर बनाना था. बांध स्थल के मध्य में बह रही नदी का प्रवाह बहुत तेज था व दोनों ओर ऊंचे- ऊंचे मिट्टी के पहाड़ थे जो की जंगली वृक्षो व खून चूसने वाली जोंक से भरे हुए थे. लेवलिंग का कार्य पिछले फील्ड सीजन में हो चुका था अतः उन्ही बेंचमार्क की मदद से में अपना कार्य करने लगा. मिट्टी के पहाड़ पर चढ़ना/उतरना अत्यंत कठिन होता है और फिसलने का डर बना रहता हैं. NHPC ने दो स्थानीय श्रमिक दिए थे. उनके पास दांव (तलवार का छोटा रूप जिसे अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय लोग हमेशा अपने पास रखते हैं) थे और वह पहाड़ पर पेड़ काटकर रास्ता बनाते हुए चलते थे और में

उन्ही के पीछे- पीछे चलता जाता था. पहाड़ से उतरते समय में भी दो-तीन बार फिसला व चोट भी लगी लेकिन मैंने काम जारी रखा. कभी-कभी लगातार तीन दिनों तक बारिश होती रहती थी, इसलिए मौसम खुला होने पर छुट्टी हो या रविवार, में अपना फील्ड कार्य करता था. लेकिन इससे खलासी व पटल चित्रक दुःखी थे, क्योकि अरुणाचल प्रदेश में दुगना दैनिक भत्ता था और कार्य जल्दी समाप्त हो जाने की दशा में उनका नुकसान था.

मेरा कार्य काफ़ी तेज गति से चल रहा था. नदी के एक ओर पक्की सड़क थी परन्तु दूसरी ओर जाने का रास्ता बहुत ही दुर्गम था. सड़क से नदी लगभग 50 मीटर नीचे थी. में एक बार वहाँ जा चुका था. नदी पार करने के लिये बहुत दूर व नीचे जाकर NHPC द्वारा बनाये गये अस्थायी पुल से जाना पड़ता था. उसके बाद पहाड़ो के जंगल से नदी के किनारे-किनारे होते हुए जाना पड़ता था. अनेक स्थानों पर मिट्टी ढह जाने के कारण पेड़ के तने के ऊपर से जाना पड़ता था. रास्ता काफ़ी फिसलन भरा था और जरा सी गलती से सीधे नीचे बह रही नदी गिरना तय था. नीचे गिरने की स्थिति में जीवित बचने की कोई उम्मीद नहीं थी. इसी रास्ते से वापिस आना पड़ता था. आने-जाने में ही लगभग पांच घंटे का समय लगता था.

जब में दूसरी बार नदी के पार गया तो काम करते-करते शाम हो गयी. खलासी जल्दी चलने के लिये कह रहे थे लेकिन में पूरा काम समाप्त करके ही वापिस जाना चाहता था. काम छोड़ कर जाने पर पुनः आना पड़ता, जो मैं नहीं चाहता था. अतः कार्य समाप्त कर मैं और दो खलासी सभी उपकरण इत्यादि लेकर चल दिए और तेजी से जंगल का क्षेत्र पार किया. जंगल पार कर नदी के तट पर आते-आते अंधेरा हो गया लेकिन रुकने का वहां कोई साधन नहीं था. दिन भर काम करके और चलते-चलते में बुरी तरह थक गया था. नदी के तट पर एक नाविक बैठा था. उसके पास बांस को आपस में रस्सियों से बांधकर तैयार की गयी नाव थी. उसने मुझसें कहा की वह पचास रूपए में नदी के उस पार पहुंचा देगा. नदी का तेज वहाव, रात का समय व उसकी नाव देखकर डर तो बहुत लग रहा था लेकिन चलने की भी ताकत नहीं बची थी, सो मैनें नावँ से नदी पार करने का फैसला कर लिया. खलासियों को मैनें रिकॉर्ड, उपकरण इत्यादि देकर पुल वाले रास्ते से भेज दिया और नाव से नदी पार कर ली. नदी पार करके अब मुझें लगभग 50 मीटर पहाड़ पर चढ़ते हुए पक्की सड़क पर पहुंचना था. बहुत ही कठिनाई से किसी तरह मैनें वह चढ़ाई पूरी की और ऊपर पहुँच गया, तब तक वह खलासी नहीं पहुंचे थे. कुछ देर बाद वह भी आ गये और हम सभी ट्रक से वापिस शिविर की और लौट गये.

वाहन चालक व अन्य खलासियों ने कहा कि आपको नदी इस तरह पार करके नहीं आना चाहिए था अगर वह नाव पलट जाती तो कुछ भी हो सकता था लेकिन मैनें उनकी बात को टाल दिया. दो-तीन दिनों के पश्चात् कायिंग में लगे साप्ताहिक बाज़ार में, में अपने शिविर अर्दली के साथ दैनिक उपभोग की वस्तुए खरीद रहा था तभी वहाँ NHPC में कार्यरत एक अधिकारी मिल गये. बातों-बातों में उन्होंने बताया की कल रात को बांध स्थल के पास नदी तट पर नाविक व दो लोग नाव

से नदी पार करते समय नदी में नाव पलटने से बह गये. अभी तक उनकी लाश नहीं मिल पाई है. सुनकर मेरें रोंगटे खड़े हो गए लेकिन मैनें उनसे कुछ नहीं कहा और वापिस शिविर में आ गया. लगभग दो सप्ताह के बाद मेरा कार्य समाप्त हो गया और मार्च के अंतिम सप्ताह में, में वापिस ट्रक से निदेशक कार्यालय, शिलांग वपिस आ गया. अभी भी में उस वाकये को याद करता हूँ तो सोचता हूँ शायद मेरा जल्दबाजी में लिया गया निर्णय गलत था.

*****

जिनके पास विश्वास है, उनके पास सब कुछ है और जिनके पास विश्वास नहीं है, उनके पास कुछ भी नहीं। विश्वास ही जीवन है और अविश्वास मृत्यु।

– रामकृष्ण परमहंस

अफसरशाही

श्री के॰ पी॰ मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

एक कर्मचारी अपने निदेशक के पास एक महीने की अर्जित अवकाश की अर्जी लेकर जाता है और उन्हें देता है।

महाशय आप हमें एक महीने की अवकाश देने की कृपा करें। निदेशक जी अर्जी को पढ़ते हैं और उसे बैठने को कहते हैं। फिर उसे कागज देते हुए कहते हैं कि लिखो– आपको वर्ष में E.L., Commuted Leave, Casual Leave, Restricted Leave, Gazetted Holidays , Saturday, Sunday मिलते हैं उसे जोड़ कर बताओ।

कर्मचारी जोड़ता है – (30+10+8+2+17+105) = 172 दिन
निदेशक – वर्ष में कितने दिन होते हैं। सर, 366 दिन।
निदेशक – 366 से 172 घटाओ। कितना बचा? सर, 194 दिन।
निदेशक– 194 दिन कुल कितने महीने हुए ?
कर्मचारी – सर छः महीने कुछ दिन।
निदेशक – तो छः माह आप काम किये। तुम्हें शर्म नहीं आती है छुट्टी मांगते हुए। पूरे साल में केवल छः महीने काम करते हो और 1 महीना का अवकाश मांगते हो।

E.L.	=	अर्जित अवकाश
Commuted Leave	=	परिणत अवकाश
Restricted Leave	=	प्रतिबंधित अवकाश
Gazetted Leave	=	राजपत्रित अवकाश
Saturday	=	शनिवार
Sunday	=	रविवार

*****

अच्छे दिन आएंगे ?

श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

पे कमीशन आया, सातवां पे कमीशन आया।
सभी कर्मचारियों को अंगूठा दिखाता, पे कमीशन आया।
भैया पे कमीशन आया, सातवां पे कमीशन आया॥

पे कमीशन ने भैया, बस लक्ष्य यही इक ठाना है।
गुजर-बसर करते जैसे, वो बंधुआ मजदूर बनाना है॥
जब दिल्ली वालों ने, लाख रूपये कर लिए वेतन।
तब चुप्पी साधे बैठा रहा पे कमीशन॥

आटे-चावल का जाने कौन-सा मोल-भाव किया।
मात्र 18000 रूपये का न्यूनतम वेतन, भारत सरकार को रिपोर्ट दिया॥
15750 से बढ़ाकर 18000 का वेतन, कुल 2250 रूपये बढ़ाने वाली।
सभी सरकारी कर्मचारियों की खिल्ली खूब उड़ाने वाली॥
ये सरकार तो और निराली निकली।
खुद को भामाशाह बताने वाली निकली॥

मीडिया में खूब बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया।
वेतन आयोग को ऐतिहासिक घोषित किया॥
वाकई वेतन आयोग तो ऐतिहासिक है।
द्वितीय वेतन आयोग से भी न्यूनतम वृद्धि, ऐतिहासिक तो है॥

हमारे माननीय सांसद कहते हैं,
50000 में उन्हें अतिथि को चाय तक पिलानी मुश्किल है।
भारत की गौरवशाली परंपरा का,
दायित्व निभानी मुश्किल है॥

फिर हमें वही सांसद 18000 में पूरे परिवार चलाने कहते हैं।
सहर्ष कैबिनेट प्रस्ताव पास करती, विरोध के स्वर नहीं उठते हैं॥
खुद एक सत्र भी कार्य किया और पूर्ण पेंशन तक प्राप्त किया।
लेकिन हम सरकारी सेवक, 60 वर्ष की उम्र तक कार्य करें।
फिर भी पेंशन लाभ से मरहूम रहें॥

इन सब बातों से वेतन आयोग को कोई सरोकार नहीं।
उन्हें सरकार से मतलब है, सरकारी सेवक से बेमतलब का प्यार नहीं॥

पहले दिल्ली वाले विधायक, लाख रूपये कर गए खुद का वेतन।
अब मुम्बई वालों ने कर लिए 2 लाख रूपये अपना वेतन॥
काश हमें भी ऐसे अधिकार मिले होते।
कम-से-कम रोटी दाल के पूरे पैसे लिए होते॥

अब थोड़ी-थोड़ी बात समझ में आती है।
महलों में रहने वालों को रोटी-दाल का भाव, कहां पता चल पाती है॥
अब तो मोदी जी का दिखाया सब्जबाग भी लूट गया।
हां अच्छे दिन आएंगे ये सपना "शुभेश" का टूट गया॥

*****

ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां हमारे अंदर निहित हैं और ये हम ही हैं जो अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर अंधकार होने का रोना रोते हैं।

– स्वामी विवेकानन्द

आत्मसम्मान

श्री रूप कुमार दास
अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

कुछ कुछ घटना ऐसा घटता है जो की छोटा है लेकिन मन की गहराई तक चला जाता है. बहुत दिन पुराना एक छोटी सी घटना घटी थी जो की मेरे मन के अंदर तक चला गया।

अभी वर्तमान समय में गतिमय जिन्दगी में जब आदमी आदमी के साथ कठिन व्यवहार करते है किन्तु अपना बोल कर कुछ नहीं है इसी समय उस घटना का व्याख्यान करना बहुत जरूरी समझा।

जब उतराखंड का आन्दोलन चरम तक पहुंच गया और हर रोज बंद होने से देहरादून का जीवन और अस्त व्यस्त हो गया उसी समय अगस्त महीना का शाम चार बजे हमलोग पूरा एक टीम डोक्रानी भामक ग्लेशियर (DOKRANI BHAMAK GLACIER) के सर्वेक्षण करने के लिए निकल पड़े थे। दो दिन के अंदर हम लोग उतर काशी तक पहुंच गये। वहाँ पर पहुचने के बाद आंदोलनकारीयों के साथ-साथ प्रकृति भी विपरीत में चला गया। हम लोगों को उत्तर काशी से पैदल यात्रा शरू करना पड़ा क्योंकि लैंड स्लाइड से रास्ता पूरा बंद हो गया था। दो दिन छोड़ कर हमलोग पैदल चलते-चलते एक छोटी सी गाँव बुकि में पहुंच गये जहां से हमलोगों को असली ग्लेशियर के लिए भागा - भागी शुरू करना था।

रास्ते के किनारे में छोटी सी समतल जगह में शिविर लगा था। वहां पर हमलोगों को दो तीन दिन ठहरना पड़ा। एक दिन सुबह की घटना मेरे मन में याद आ गयी। एक औरत रास्ता के बगल में बैठ कर पत्थर तोड़ रही थी और उसका दो साल का बच्चा बगल में खेल रहा था। शायद सुबह से ही बच्चा दूध नहीं पिया था , इसलिए माँ दूध पिलाने के लिए इशारा करके बुला रही थी लेकिन बच्चा खेलने में इतना व्यस्त था कि माँ की आवाज उसको सुनाई नहीं देता था। दो -तीन बार बुलाने के बाद भी बच्चा नहीं आया तो पास में खेलते हुए बकरी , के बच्चा को खिंच कर अपना दूध पिलाना शुरू कर दी तब बच्चे ने दोड़कर माँ के पास आया और बकरी के बच्चा का पूछ पकड़ कर खींचने लगा। दो साल के बच्चा के अंदर में भी आत्म-सम्मान का रूप देखकर मैं चकित हो गया। यह महसूस करता हूँ और मुझे दुःख होता है की हमारे आस पास के लोगों में चाहे वो घर या कार्य-क्षेत्र हो आत्म-सम्मान का बोध नहीं है।

आलसी बेटा

श्री के. पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

1.

एक वैज्ञानिक ने अपने बेटे को बुलाकर कहा– बेटा, मैंने तुम्हारे जीवन में जो लगता है वह मैंने इस कम्प्यूटर में फीड कर दिया है। बटन दबाते ही तुम वह वस्तु पा जाओगे। बेटा– मगर पापा बटन कौन दबायेगा।

*****

2.

एक मित्र ने अपने मित्र से पूछा – बताओ शादी के बाद क्या होता है। दूसरे मित्र ने कुछ सोच कर कहा – पहले साल पति बोलता है, पत्नी सुनती है। दूसरे साल पत्नी बोलती है, पति सुनता है। तीसरे साल पति और पत्नी दोनों बोलते हैं और पड़ोसी सुनते हैं।

*****

3.

शादी के कुछ साल बाद पति और पत्नी में झगड़ा हो जाता है। पति गुस्से में कहता है सुनो– शादी के पहले साल तुम चन्द्रमुखी थी, दूसरे साल सूरजमुखी और तीसरे साल तुम ज्वालामुखी बन गयी। पत्नी गुस्से में कहती है– सुनिये पहले साल आप मेरे प्राणनाथ थे। दूसरे साल आप मेरे नाथ हो गये और तीसरे साल आप अनाथ हो गये।

*****

आहार चेतना—मानवीय, धार्मिक एवं वैज्ञानिक पक्ष

श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

किसी भी मनुष्य का विचार उसके आहार पर निर्भर करता है। सात्विक आहार से शुद्ध विचार की उत्पत्ति होती है। इस सम्बंध में श्रेष्ठजनों से सुनी एक लघुकथा आपके साथ साझा करना चाहता हूं। बहुत समय पहले की बात है, एक परम ज्ञानी तपस्वी ऋषि थे। वे बालपन से ही भगवत प्रेमी एवं सदाचारी थे। वे गांव—गांव घूम कर उपदेश दिया करते थे। एक बार गर्मी के समय वे किसी गांव से गुजर रहे थे। रेगिस्तानी इलाका था, इसलिए उन्हें शीघ्र ही प्यास सताने लगी। बहुत दूर चलने के बाद उन्हें एक कुंआ दिखाई पड़ा। वहां रखी बाल्टी से पानी निकाल कर उन्होंने अपनी प्यास बुझाई। प्यास बुझने के बाद उनके मन में एक विचार आया कि क्यों न मैं ये बाल्टी जल से भर कर अपने साथ रख लूं ताकि आगे यात्रा के दौरान मुझे प्यास लगे तो मुझे प्यास से तड़पना न पड़े। यह सोचकर उन्होंने बाल्टी पानी से भरी और साथ लेकर आगे बढ़ चले। कुछ देर चलने के पश्चात मानों उनका ध्यान टूटा। वे सोचने लगे मुझ से कितना बड़ा पाप हो गया। मैंने कभी कोई बुरा कार्य नहीं किया और आज मैंने चोरी कर ली। वह भी ऐसे कुंए के बाल्टी की चोरी, जो न जाने कितने प्यासों को तृप्त करती थी। वे यह सोचने के लिए विवश हो गए कि इतना तप एवं भगवत ध्यान के पश्चात भी मेरे मन में ऐसे कुत्सित भाव कैसे उत्पन्न हुए। वे इसका पता लगाने पहुंचे। गांव वालों से उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कुंआ एक चोर ने अपने आखिरी समय में पुण्य प्राप्ति हेतु चोरी के धन से खुदवाई थी। अब उन्हें समझ में आया कि चोरी का यह भाव उनके मन में कैसे उत्पन्न हुआ। कहा भी गया है— जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन।

तो शुद्ध विचार के लिए आहार सात्विक होना परम आवश्यक है। सात्विक आहार अर्थात शाकाहार। शाकाहार हमारे शरीर को अनेक व्याधियों से बचाता है। आज जब संपूर्ण विश्व हमारे गौरवशाली भारतीय संस्कृति पर मंथन कर उसे आत्मसात कर रही है। वहीं गौतम बुद्ध, महावीर जैन, कबीर, नानक जैसे महान पुरूषों की जननी इस वसुंधरा की संतति होकर भी हम पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण में लगे हुए हैं। अभी हाल ही में मैंने एक लेख पढ़ा था जिसमें बताया गया था कि इंग्लैण्ड एवम् अमेरिका में हाल के दशक में शाकाहार अपनाने वालों की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। हमें इस विषय पर आत्ममंथन करने की आवश्यकता है कि जिस बौद्ध धर्म ने भारत के बाहर अनेक देशों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है, वह अपने ही देश में उपेक्षित क्यों है। महावीर, कबीर, नानक के विचार यहीं अप्रासंगिक क्यों है।

मैं सर्वप्रथम शाकाहार पर बल देने हेतु इसके मानवीय पक्ष को आपके सामने प्रस्तुत करता हूं। दया, संयम, उचित—अनुचित का भेद ज्ञान यही सब गुण तो मनुष्य को मनुष्य बनाता है अन्यथा उसमें और पशु में क्या अंतर रह जाएगा। यही तो मानवता है। अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं। यदि आपके घर में कोई शुभ कार्य होता है अर्थात विवाह, जन्मोत्सव आदि। तो उन अवसरों पर भी मांस का सेवन किया जाता है। आप बताएं कि अपने पुत्र के जन्म की खुशी मनाने के लिए किसी और के पुत्र की बलि चढ़ाना उचित है? आप जिस जीव (बकरी, मुर्गी,मछली आदि) का मांस परोस रहे हैं वह भी तो किसी का पुत्र/पुत्री था। खुशी आपके घर आई इसमें उनका क्या दोष जिन्हें अपना संतान खोना पड़ा। तनिक विचार कर देखिए।

अब मैं शाकाहार के धार्मिक पक्ष से आपको अवगत कराना चाहूंगा। भगवान महावीर ने जीव—हत्या को अत्यंत निकृष्ट कार्य माना है एवम् शुद्ध—सात्विक आहार पर सर्वाधिक बल दिया है। उन्होंने तो शुद्ध आहार के साथ—साथ प्राणवायु की शुद्धता पर भी बल दिया है। आप जैन पंथ के मानने वालों को देखते होंगे कि वे मुंह पर कपड़ा बांधकर रखते हैं। वो इसलिए कि भूल से भी श्वास के माध्यम से कोई जीव, कीट—पतंग उनके मुंह में न चला जाए और वे उनकी हत्या के अपराधी न हो जाएं। परन्तु उनके विचार गृहस्थ एवम् सामाजिक व्यवस्था में प्रचलित नहीं हो पाये क्योंकि उनके बनाए नियम अधिकांशतः सन्यास व्यवस्था पर आधारित थे। वहीं गौतम बुद्ध ने इसे थोड़ा सरल बनाकर सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल बनाया। इस कारण वह उस समय बहुत प्रचलित हुआ। उन्होंने भी जीव—हत्या को सर्वथा निषेध बताया। दशावतार में गौतम बुद्ध को भगवान विष्णु का नौवां अवतार माना गया है।

वेदों में भी कहा गया है – *"व्रीहिमत्तं यवमत्तमथोमाषम तिलम् एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च।"* अर्थात चावल खाओ (व्रीहिम् अत्त), जौ खाओ (यवम् अत्त) और उड़द खाओ (अथो माषम्) और तिल खाओ (अथो तिलम्)। हे ऊपर नीचे के दांत (दन्तौ) तुम्हारे (वां) ये भाग (एष भागो) निहित है उत्तम फलादि के लिए (रत्नधेयाय)। किसी नर और मादा को (पितरं मातरं च) मत मारो (मा हिं सिष्ट)।

संत कबीर साहब ने कहा है–

जस मांसु पशु की तस मांसु नर की, रूधिर—रूधिर एक सारा जी।
पशु की मांस भखै सब कोई, नरहिं न भखै सियारा जी।।
ब्रह्म कुलाल मेदिनी भरिया, उपजि बिनसि कित गईया जी।
मांसु मछरिया तो पै खैये, जो खेतन मँह बोईया जी।।
माटी के करि देवी—देवा, काटि—काटि जीव देईया जी।
जो तोहरा है सांचा देवा, खेत चरत क्यों न लेईया जी।।
कहँहि कबीर सुनो हो संतो, राम—नाम नित लेईया जी।
जो किछु कियउ जिभ्या के स्वारथ, बदल पराया लेईया जी।। (शब्द—70)

शब्दार्थ :– जैसा पशु का मांस , वैसा ही मनुष्य का मांस है। दोनों में एक ही रक्त बहता है। मांसाहारी पशु मांस का भक्षण करते हैं और जो मनुष्य ऐसा करता है वो सियार के समान है। ईश्वर रूपी कुम्हार (ब्रह्म कुलाल) ने इतने बाग—बगीचे बनाये, फल—फूल बनाया वो सब उपज कर कहां जाते हैं। मांस—मछली खाना तो दोषपूर्ण (पै) है। उसे खाओ जो खेतों में बोआ जाता है। मिट्टी के देवी—देवता बनाकर उन्हें जीवित पशु की बलि चढ़ाते हो। यदि तुम्हारे देवता सचमुच बलि चाहते हैं तो वह खेतों में चरते हुए पशुओं को क्यों नहीं खा जाते। कबीर साहेब कहते हैं कि यह सब कर्म त्याग कर नित राम—नाम (भगवान नाम) का सुमिरन किया करो। अन्यथा तुम जो भी अपने जिह्वा के स्वाद के कारण यह कर रहे हो उसका बदला भी तुम्हें उसी तरह चुकाना पड़ेगा।

एक दूसरी जगह संत कबीर कहते हैं – *"पंडित एक अचरज बड़ होई। एक मरि मुये अन्न नहिं खाई।। एक मरि सीझै रसोई।।"* अर्थात हे पंडितों, ज्ञानियों एक बहुत बड़े अचरज (आश्चर्य) की बात सुनाता हूं। एक जीव के मरने पर तो तुम शोक मनाते हो और अन्न नहिं खाते हो वहीं दूसरी ओर एक जीव को मारकर रसोई बनाते हो।

अब शाकाहार के सम्बंध में कुछ वैज्ञानिक तथ्यों पर भी प्रकाश डालते हैं। हमारे शरीर की रचना कुछ इस प्रकार की है जिससे वह शाकाहारी प्राणियों के समूह में आता है। मांसाहारी जंतुओं में मांस को चीरने–फाड़ने के लिए बेहद नुकीले व पैने दांत रदनक (Canine) पाया जाता है। परंतु मनुष्यों में इसका अभाव होता है। समस्त मांसाहारी जीव अपनी जिह्वा से पानी पीते हैं। परंतु शाकाहारी जंतु पानी घूंट–घूंट कर पीते हैं और गटकते हैं। मनुष्य भी ऐसा ही करता है। आप यदि कहीं विक्षिप्त शव या कोई मांस का टुकड़ा इत्यादि देखते हैं तो सर्वप्रथम घृणा का भाव पैदा होता है। क्योंकि हमारा शरीर की बनावट शाकाहारी जंतु की है, इसलिए मस्तिष्क सम्बंधित तंत्रिका को घृणा का भाव प्रेषित करता है, जिससे हम विक्षिप्त शव या कोई मांस का टुकड़ा इत्यादि देखते ही मुंह फेर लेते है। यदि हमारा शरीर मांसाहारी प्रकृति का होता तो उसके लिए यह लालसा की वस्तु होती। परंतु ऐसा नहीं होता।

छान्दोग्योपनिषद मे कहा गया है– *"आहारशुद्ध होने से अंतःकरण की शुद्धि होती है, अंतःकरण के शुद्ध हो जाने से भावना दृढ़ होती है और भावना की स्थिरता से हृदय की समस्त गांठे खुल जाती है।"*

इस सम्पूर्ण आलेख का सार यह है कि अपनी आहार चेतना को जागृत कर हमें शाकाहार पर बल देना चाहिए। शाकाहार ही सर्वोत्तम आहार है।

*****

सभी को मरना है, सज्जन भी मरेंगे और दुर्जन भी मरेंगे, गरीब भी मरेंगे और अमीर भी मरेंगे। इसलिए निष्कपट होकर जीवन जियो।

– स्वामी विवेकानन्द

उचित सलाह

श्री एस. के. ढाली
अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

दो मित्र आपस में बातचीत कर रहे थे। उनमें एक की उम्र 47 वर्ष थी और दूसरे की उम्र 54 वर्ष थी। 54 वर्ष के मित्र की पत्नी का देहांत हो चुका था। एक दिन दूसरे मित्र ने पहले से कहा मित्र अब दिन तो कट जाता है मगर रात्रि की तन्हाई काटे नहीं कटती क्या किया जाए। पहले मित्र ने कहा –

विवाह की चाह उठे मन में जब,
20, 25 और तीस, करि लीजै।
40 वर्ष में खीस भये जब,
50 वर्ष में नाम न लीजै।।
60 वर्ष में मन ललचाये तो,
काढी के जूता कपार पर दीजै।।

*****

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है.एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है. शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है.

- चाणक्य

एक सुंदर सोच

सुश्री सुस्मिता देव
अवर श्रेणी लिपिक, दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद

एक महात्मा जी ने एक दीवार पर बड़ा सा सफेद पेपर लगाया और मार्कर से उस पर एक काला डाट लगा दिया।

फिर सब लोगों से पूछा कि :-तुम्हे क्या दिख रहा है ?

सब लोग बोलें :- काला डाट।

महात्मा जी बोले :- कमाल है, इतना बड़ा सफेद पेपर नजर न्ही आया।

यही हाल आज कुछ लोगों का है, उन्हें किसी व्यक्ति की सारी जिन्दगी की अच्छाई नजर नही आती मगर उसकी छोटी बुराई तुरंत नजर आ जाती है---॥

अच्छा काम करते रहो, कोई सम्मान करें या न करें ।

*****

क्रोध से भ्रम पैदा होता है. भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है. जब बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है. जब तर्क नष्ट होता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है.

- श्रीमद् भगवद्गीता

कभी सुबह तो होगी

श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

सूरज की लालिमा बिखर चुकी है, रात का अंधियारा छंट चुका है ।
उगते हुए उस बड़े से सूरज को देख, वो मासूम बचपन याद आ रहा है ।।
जो कहीं खो गया है, गुम हो गया है ।।

आप कहते हैं मैं अभी सात का हूं, तो कहां छुपा है, यहीं है, यही तो है मेरा बचपन ।
हां यही है मेरा बचपन, खयालों में ही सही, यहीं है, यही है मेरा बचपन ।।

खयालों में ही सही, हमउम्रों को देख मैं भी, धूलों में लोटता हूं, गाँव की गलियों में दौड़ता हूं ।
कंचे खेलता हूं, धूम मचाता हूं, खयालों मे ही सही ।
मालिक के डांटने पर, पीटने पर माँ बालों में, प्यार से हाथ फेरती तो है, खयालों में ही सही ।
हां बचपन तो है, खयालों में ही सही ।।

कल एक प्लेट ही तो टूटी थी, या फिर मेरी किस्मत ही फूटी थी।
उसने गालियों की जो गुबार निकाली थी, सुनकर शायद शरम भी शरमाई थी।।
पर मैं, मैं नहीं शरमाया था, मैं तो वहीं बुत बना खड़ा था।
शायद खुद को ढूंढ रहा था।।

अब तो मेरे आंसू भी सूख गये हैं,
ये तो रोज की बात है, कह वो भी रूठ गये हैं।
कभी गाली, कभी मार–पीट, यही अब मेरी कहानी है।
भर–पेट खाने की लालसा में, बीती जा रही जिन्दगानी है।।

ऊषा की लालिमा तो रोज आती है,
सारे जग के अंधकार मिटाती है।
मेरा अंतर्मन मुझे देता है रोज दिलासा, कि कभी तो कोई आएगा।
जो मसीहा बनकर, मेरे सिसकते हुए बचपन को फिर से हंसाएगा।।

सपनों की वो जमीं कभी सच तो होगी।
हां शुभेश आज न सही, मेरे लिए भी कभी सुबह तो होगी।।

(कृपया बाल–मजदूरी को बढ़ावा मत दें)

*****

कयामत

चौधरी मोहम्मद आरिफ
सर्वेक्षण सहायक, पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

हम देखेंगे
लाजिम है के हम भी देखेंगे
वो दिन के जिसका वादा है, हम देखेंगे, हम देखेंगे
जो लोहे अजल में लिखा है।
हम देखेंगे, लाजिम है के हम भी देखेंगे ।

जग जुल्मों सितम के कोहे गरॉं,
रूई की तरह उड़ जाएंगें,
हम महकूमों के पॉव तले
ये धरती धड़ धड़ धड़केगी,
और अहले हकम के सर ऊपर
जब बिजली कड़ कड़ कड़केगी,
हम देखेंगे, लाजिम है के हम भी देखेंगे ।

जब अर्जे खुदा के काबे से
सब बुत उठवाये जाएंगे,
हम अहले सफा मरदूदे हरम,
मसनद पे बिठाये जाएंगे,
सब ताज उछाले जाएंगे,
सब तख्त गिराये जाएंगें
हम देखेंगे, लाजिम है के हम भीं देखेंगे ।

बस नाम रहेगा अल्लाह का
जो गायब भी है, हाजिर भी,
जो नाजिर भी है, मन्जर भी,
उठेगा नलहक का नारा,
जो मै भी हूँ, और तुम भी हो,
और राज करेगी खल्के खुदा,
जो मै भी हूँ, और तुम भी हो,
हम देखेंगे, लाजिम है के हम भी देखेंगे ।

*****

गुरू की वाणी अमृत जैसा

श्री शिवेश कुमार
भ्राता : श्री शुभेश कुमार, प्र॰ श्रे॰ लि॰, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

गुरू की वाणी अमृत जैसा
मीठा नहीं मधुर कोई वैसा।
बरसों की प्यासी धरती पर,
इन्द्रदेव की कृपा के जैसा।
गुरू की वाणी...............

गुरू ही सबको मार्ग बतावें
सबको सदा सुपंथ चलावे।
उस मार्ग पर सदा जो चलता
होता भला सदा ही उसका।

जाति-पांति का भेद मिटाकर
सब से सच्ची प्रीत लगाकर।
मानव की सेवा जो करता
निज धाम को प्राप्त वो करता।

गुरू का वचन सदा जो माना
भव-बन्धन से है छुटि जाना।
सब व्याधि को दूर वो कर दें
जन्म-मरण की पीड़ा हर लें।

गुरू की वाणी औषधि ऐसा।
गुरू की वाणी अमृत जैसा॥

*****

घर कैसा हो

श्री रामकृष्ण मोरे
आर्टिफिसर, दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद

कवि कहते है :-

मन्त्र नास्ति दधिमंथनघोषः। यत्र नास्ति लघुलघूनि शिशुनि।

यत्र नास्ति गुरुगौरवपूजा। तामि कि बत गृहाणी वनानि॥

जहाँ दधि मंथन घोष नहीं है,जहाँ छोटे छोटे शिशु नहीं है,जहाँ गुरु जनों की प्रति श्रद्धाभाव नहीं है,उसे क्या घर कहें ? वः तो जंगल है। दधि मंथन घोष :-पहले घर में गौशाला होती थी। बड़े प्रेम से उन प्राणियों का संवर्धन होता था। गौएँ भी मधुर दूध की धाराएं बहाती थी। भरपूर दूध था अतः बड़े मटके में मलाई जमा कर गृहणी मथनी को रस्सी बांधकर मंथन करती थी। उसकी आवाज घर में गुंजायमान होती थी। घर में प्रचुर मात्र में तैयार होनेवाला छाँछ वः अडोस पडोस में देती थी। इस लें दें से घर घर की गृहणी का नित्य संपर्क रहता था। किसी दिन कोई न आया तो पूछताछ होती थी। बीमारी का पता चलता तो घरेलू दवाइयाँ का थैला लेकर उपचार के लिए जाती थी। दादी माँ का झोला गुणकारी रहता था। किसी पड़ोसी के घर में जच्चा-बच्चा हो तो घी ,चावल दिया जाता था। पापड़ बेलने के लिए मोहल्ले की महिलाएं अपना अपना बेलन- पाट लेकर जाती थी, और उस घर के पापड़ बेलने के बाद थोड़े-थोड़े पापड़ सभी को दिए जाते थे। ग्रीष्म-कालीन सभी काम ऐसे ही सामूहिक रूप से होते थे। घर में अचानक किसी चीज की आवश्यकता पड़ी तो पड़ोसी परिवार से निःसंकोच मांगी जाती थी। अडोस-पडोस के स्नेह-बंध ऐसे होते थे कि एक घर का सुख दुसरे घर का भी सुख होता था। घर में और क्या हो? अनेक शिशु हो,उनकी किलकारियों से घर निनादित हो। इससे अधिक दिव्य संगीत क्या हो सकता है। अपने ही नहीं तो आसपास के बच्चे आयें घर की दादी सभी को प्यार दे। उन्हें कुच्छ सिखाएं,खिलायें ऐसी आकांक्षा होती थी। दादी की बताई हुई कहानियाँ जीवन का पाथेय बनता था। घर में शिशु का अस्तित्व भविष्यकाल दर्शन है। उसे अच्छे से विकसित करना है। दादा-दादी अतीत का रूप है जो वर्तमान में भविष्य गढ़ रहे है। उसके सामने सदगुणों की पूजा कर रहे है, तभी तो सदगुणों में आस्था बढ़ेगी। बच्चों के सामने बड़ो का सम्मान किया जाता है। देखकर ही वे जानते थे बड़ो के साथ कैसा व्यवहार हो।

घर में तीन पीढ़ियों का रहना अथार्त भूत-वर्तमान-भविष्य का रहना कल-आज-कल का रहना। केवल वर्तमान में जीने की हमारी पद्धति नहीं है। भूत और भविष्य को साथ लेकर जीना हमारी पद्धति है। इसी कारण वृद्धाश्रम की आवश्यकता ही नहीं थी। मेरे माता पिता का दायित्व मेरा अपना है , न समाज का न सरकार का। माता पिता के शब्दों का कृतज्ञता के कारण सम्मान होता था।

माँ के मना करने पर आशुतोष मुखर्जी विदेश नही गये। आज भी माँ की इच्छा का गौरव करनेवाले कई युवक दिखाई देते है। घर में बुजुर्ग व्यक्ति होना घर का सौभाग्य माना जाता है। उनका अमृत महोत्सव सहस्त्र चन्द्र दर्शन के कार्यक्रम उत्साह से किये जाते है। घर में पड़पोता होता है तो दादा दादी को सुवर्ण पुष्प चढाये जाते है। अतः हमारी भारतीय संस्कृति को विश्व में सर्व प्रकार से संरक्षण देना हमारा दायित्व है, नही तो हमारी आनेवाली पीढ़ी हमें क्षमा नही करेगी।

*****

अंग्रेजी आवश्यक है क्योंकि वर्तमान में विज्ञान के मूल काम अंग्रेजी में हैं. मेरा विश्वास है कि अगले दो दशक में विज्ञान के मूल काम हमारी भाषाओ में आने शुरू हो जायेंगे, तब हम जापानियों की तरह आगे बढ़ सकेंगे.

- अब्दुल कलाम

चेतना

श्री आशुतोष चक्रवर्ती
अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

चेतना आज भी तुम्हारा अवसान नहीं हुआ है,
तब किस कारण से तुम हमारे मस्तिष्क में धक्का नहीं देते।

क्या तुम बोलोगे कि तुम्हारे जैसे बनते हैं
अगर हमलोग तुम्हारे जैसे नहीं होते
तो क्या बिगड़ जाएगा इस धरा में।
शायद हमलोग गलत हैं, हर चीज में हमलोगों की धारणा गलत है।
असली क्या है कि हमारे विवेक हमलोगों को बहुत घबड़ा देता है।
क्या ठीक है, क्या गलत है, यही हमलोगों को घबड़ा देता है।
बन्द दरवाजा में धक्का दिया है तुमने
समझते–समझते समय चली गई तब
देखा है हमहीं अकेला हैं।
तू बताओ तुम्हारा क्या कोई स्थिरता नहीं है।
इधर–उधर भागते हो तुम क्यों
क्या तुम्हारा मानसिक शक्ति चंचल है।
चेतना तुम्हारा कोई नुकसान या कोई कीर्ति नहीं है क्या।
विवेक बोलता है कि हम तुमलोगों के चेतना के प्रीति हैं।
तुमलोग जब इतना करीब हो तो, तुम दोनों में झगड़ा क्यों है।
आइये दोस्त, हम सब मिलते हैं इस समाज निर्माण के लिए।
हमलोग मानव या माटी, सब चीजों में तुमलोग बहुत हिसाब लेते हो।
ऊर्जा को लेकर हमलोग सबकुछ में, बहुत आगे आगे जाता है।
उसदिन हमलोगों को सुनने में आया है
कि इस समाज में चल रही अन्तरात्मा की रोना और आवाज।
बेच दिया हमें, मिला मुझे केवल अन्तरधान
चिल्ला के बोला, चेतना तुम कहां है ।
और बोला, विवेक तुम्हारा क्या
कोई अस्तित्व नहीं है क्या ।
जवाब मिला, भूल जाओ हमलोगों को
हमलोग आज राजनैतिक पार्टी का है ।
धरा से जब तुमलोग जिस दिन मिट जाओगे
उस दिन हमलोग ही राज करेंगे ।
और रहेगा चेतना की जय और विवेक की जय ।
तुमलोगों का रहेगा केवल पराजय ही पराजय ।।

*****

चार का महत्व

श्री के. पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

भूखे के लिये बासी भोजन क्या ।
प्यासे के लिये धोबी घाट क्या ।।
प्रेमी को जात–कुजात क्या।
नींद के लिए टूटी खाट क्या।।

*****

अजीबोगरीब दुनिया

अगर हम किसी का सम्मान करते हैं
तो वह हमें कमजोर डरपोक समझता है ।
आश्रय देने पर सिर पर चढ़ जाता है,
बैठने देने पर सोने को सोचता है ।
विश्वास करने पर विश्वासघात करता है
मार्ग पूछने पर गलत मार्ग बताता है।
उपदेश देने पर मुंह घुमा कर बैठता है
उपकार करने पर घमण्ड करता है।
वर्तमान में बुराई करने पर लोग
उसे अच्छा, वफादार समझते हैं।
क्षमा करने पर लोग कमजोर, डरपोक
और कायर समझते हैं।
वाह रे अजीबोगरीब दुनिया के लोग ।

*****

जिन्दगी बदलेंगे चाणक्य के सुविचार

कुमारी एन. देबमणि
कार्यालय अधीक्षक, पूर्वी मुद्रण वर्ग

1. दूसरों की गलतियों से सीखें, अपने ही अनुभव से सीखने से तुम्हारी आयु कम पड़ जाएगी।
2. व्यक्ति अपने गुणों से ऊपर उठता है, ऊंचे स्थान पर बैठने से नहीं।
3. सिंह से सीखें – जो भी करना जोरदार तरीके से करना और दिल लगाकर करना।
4. सभी प्रकार के भय में से बदनामी का भय सबसे बड़ा होता है।
5. भाग्य उनका साथ देता है, जो हर संकट का सामना करके भी लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहते हैं।
6. जैसे ही भय आपके करीब आये, उस पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दीजिए।
7. कोई भी व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है, जन्म से नहीं।
8. हर एक दोस्ती के पीछे अपना खुद का स्वार्थ छिपा होता है, स्वार्थ के बिना कभी कोई दोस्ती नहीं होती, यह एक कठोर सत्य है।
9. भगवान मुर्तियों में नहीं है, आपकी अनुभूति ही आपका ईश्वर है और आपकी आत्मा ही आपका मंदिर है।
10. उदारता, प्रेमोदायक भाषण, हिम्मत और अच्छा चरित्र कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता, ये सारे जन्मजात गुण ही होते हैं।
11. जिस तरह गाय का बछड़ा हजारों गायों में अपनी माँ के पीछे जाता है, उसी तरह मनुष्य के कर्म भी मनुष्य के ही पीछे जाते हैं।

*****

धर्म है

श्री कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना, उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।
जिस वक्त जीना गैर मुमकिन सा लगे, उस वक्त जीना फर्ज है इन्सान का
लाजिम लहर के साथ है तब खेलना, जब हो समुन्दर पे नशा तूफान का ।
जिस वायु का दीपक बुझाना ध्येय हो, उस वायु में दीपक जलाना धर्म है।।

हो नहीं मंजिल कहीं जिस राह की उस राह चलना चाहिये इंसान को
जिस दर्द से सारी उमर रोते कटे, वह दर्द पाना है जरूरी प्यार को।
जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम है, उस चाह पर हस्ती मिटाना धर्म है।।

आदत पड़ी हो भूल जाने की जिसे, हरदम उसी का नाम हो हर सांस पर
उसकी खबर में ही सफर सारा कटे, जो हर नजर से हर तरह हो बेखबर।
जिस आंख का आंखें चुराना काम हो, उस आंख से आंखें मिलाना धर्म है।।

जब हाथ से टूटे न अपनी हथकड़ी, तब मांग लो ताकत स्वयं जंजीर से
जिस दम न थमती हो नयन सावन झड़ी, उस दम हंसी ले लो किसी तस्वीर से।
जब गीत गाना गुनगुनाना जुर्म हो, तब गीत गाना गुनगुनाना धर्म है।।
जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना, उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।।

(साभार प्रस्तुति)

*****

नारी का महत्त्व

श्री देवनारायण सिंह
अभिलेखपाल डिवि. – I, पूर्वी मुद्रण वर्ग

भारत में नारी को जो सम्मानपूर्ण स्थान मिला है। वैसा संसार में कहीं नहीं है भारत में नारी शुरू से ही आदर्श की प्रतिमूर्ति मानिजाती है।

हडप्पा संस्कृति में नारी की पूजा होती थी। अर्धनारीश्वर की कल्पना इसी बात का प्रतीक है की नारी तथा पुरुष समान है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान अथवा सामाजिक दायित्व पत्नी के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। वैदिक युग में परदा तथा सतीप्रथा नहीं थी। पुत्र के अभाव में पुत्री पिता की सम्पति की उतराधिकारिणी होती थी। मध्यकाल में भारतीय नारी के जीवन की करुण गाथा का इतिहास होने लगता है। समाज द्वारा प्रताड़ित स्त्री कन्या के रूप में पिता द्वारा , पत्नी के रूप में पति द्वारा तथा माता के रूप में पुत्र द्वारा पुरुष पर आश्रित होती चली गई।

परिवर्तनशील समय के गति के साथ भारत ने आधुनिक युग में प्रवेश किया। जागरण चेतना और विकास के युग में नारी के भाग्य ने करवट ली। आज भारतीय समाज में महिलाओं में धीरे 'धीरे जागृति आ गयी है। इस जागृति के कारण से ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे आ रही हैं। उनमें आगे बढने का उत्साह है। इन सब परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन का नतीजा है और मानसिक परिवर्तन उनमे शिक्षा मुख्य कारण है।

भारतीय समाज में व्याप्त दहेज प्रथा विषधर सांप की भाँति आज भी इस समाज मे मौजुद है।जो बेटी के पिता को कभी चैन की नींद नहीं सोने देती है। कन्यादान जैसी पवित्र रस्म इसी कारण घटिया व्यापार का रूप ले लिया है। परन्तु बहुत सी नारियों की समस्या का निराकरण करने के लिए भारतीय आदर्श को सामने रखकर अपनी स्वरूप को बचाना है। विभिन्न समस्याओं के लिए नारी को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना होगा। एक व्यक्ति के रूप में अपनी प्रतिष्ठा कायम करना होगा।आर्थिक रूप से सक्षम नारी वास्तव में सबल नारी है। सबसे गौरव की बात है की 18 जून 2016 से भारतीय वायु सेना के इतिहास में पहली बार तीन महिला अधिकारी भावना कंठ, अवनि चतुर्वेदी और मोहना सिंह महिला लडाकू पायलट के तौर कलाबाजियां करती दिखेंगी। मध्यप्रदेश के सतना से अवनि चतुर्वेदी , मोहना सिंह राजस्थान के झुंझुनू और भावना कंठ बिहार के दरभंगा से है। सुनीता विलियम और कल्पना चावला भी महिलाएं ही थी जिन्होंने केवल अन्तरिक्ष में अपनी मौजूदगी दर्ज कराई अपितु देश का नाम भी रौशन किया। इन्होने नारी का स्वरूप प्रतिष्ठा की। आज महिलाओं का हर क्षेत्र में दबदबा कायम है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था स्त्रियों की अवस्था में सुधार न होने तक विश्व के कल्याण का कोई मार्ग नहीं है। पक्षी का एक पंख के सहारे उड़ना असम्भव है।

एक नारी सुयोग सन्तान द्वारा पुरे राष्ट्र का निर्माण करने का श्रेय प्राप्त कर सकती है।

*****

नारी का सफर

श्रीमती सीमा मित्रा
खलासी, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

फूल सी कोमल बिटिया, जब धरा–धाम पर आई
कुछ हर्षित हुए, कुछ निरपेक्ष रहे,
और कुछ चेहरे, सूखी गुलाब–सी कुम्हलाई ।
बिटिया....! है आंगन आई ।।

नारी का अविराम सफर, प्रारम्भ यहीं से होता है ।
जो हर–पल, प्रति–पल, बिन आंसू के रोता है ।।

है समाज में अबला नारी,
पितृ–समाज की कथा निराली ।
स्त्रीत्व सफल कहलाता तब,
आश्रय मिलता पुरूष का जब ।।

दहेज के लोभी विकृत समाज को , खुली चुनौती देना होगा ।
अर्जुन–सा गांडीव उठा, निज संतति को लड़ना होगा ।।

इक्कीसवीं सदी का यह समाज, कब तक कुरीतियां ढोएगा ।
चक्र सुदर्शन ज्ञान–ज्योति का, मानवता को झिंझोरेगा ।।

उठ जाग मनुज अब बढ़ आगे, देर कहीं न हो जाए ।
नारी का यह अविराम ***Suffer***, कहीं समाज को ही निगल जाए ।।

*****

नीति की बातें

श्री के. पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

1. विदेश में विद्या मित्र होती है, घर में भार्या मित्र होती है। रोगी का मित्र औषधि और मरे हुए व्यक्ति का मित्र धर्म होता है।

2. औरत कितनी ही बड़ी क्यों न हो जाय वह अपने को सुन्दर, जवान समझती है और हमेशा यही उसकी चाहत रहती है कि पुरुष रूपी भौंरे हमेशा उसके आगे–पीछे मंडराते रहें।

3. मनुष्य कितना ही बड़ा क्यों न हो उसका कर्म–व्यवहार ही उसे छोटा या बड़ा बनाता है।

4. काम भले ही थोड़ा करो मगर मन लगाकर करना चाहिये।

5. इन तीनों का सम्मान करना चाहिये
माता–पिता, गुरू तथा साधु पुरूष।

*****

कोई चुनाव मत करिए. जीवन को ऐसे अपनाइए जैसे वो अपनी समग्रता में है.

\- ओशो

पिता

श्री कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है ।
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है ।।
पिता उंगली पकड़े बच्चे का सहारा है ।
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा है ।।

पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है ।
पिता धौंस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है ।।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है ।
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है ।।

पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है ।
पिता है तो बच्चों को इंतजार है ।।
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं ।
पिता हैं तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं ।।

पिता से परिवार में प्रतिपल राग है ।
पिता से ही माँ का बिंदी और सुहाग है ।।

(साभार प्रस्तुति)

*****

प्रेरक

श्री अरिन कुमार दत्ता
प्रबन्धक (कनिष्ठ), पूर्वी मुद्रण वर्ग

तीन चीजें में मन लगाने से उन्नति होती है
ईश्वर, परिश्रम और विद्या
तीन चीजों को कभी छोटी ना समझें
बिमारी, कर्जा और शत्रु
तीन चीजों को हमेशा वश में रखें
मन, काम और लोभ
तीन चीजें निकलने पर वापिस नहीं आती
तीर कमान से, बात जुबान से और प्राण शरीर से
तीन चीजें कमजोर बना देती है
बदचलनी, क्रोध और लालच
तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता
अकल, चरित्र और हुनर
तीन व्यक्ति वक्त पर पहचाने जाते हैं
स्त्री, भाई और दोस्त
तीन व्यक्ति का सम्मान करो
माता, पिता और गुरु
तीन व्यक्ति पर सदा दया करो
बालक, भूखे और पागल
तीन चीजें कभी नहीं भूलनी चाहिए
कर्ज, मर्ज और फर्ज
तीन बातें कभी मत भूलें
उपकार, उपदेश और उदारता
तीन चीजें याद रखना जरूरी है
सच्चाई, कर्तव्य और मृत्यु
तीन बातें चरित्र को गिरा देती है
चोरी, निंदा और झूठ
तीन चीजे हमेशा दिल में रखनी चाहिए

नम्रता, दया और माफ़ी
तीन चीजों पर कब्जा करो
जबान, आदत और गुस्सा
तीन चीजों से दूर भागो
आलस्य, खुशामद और बकवास
तीन चीजों के लिए मर मिटो
धैर्य, देश और मित्र
तीन चीजें इंसान की अपनी होती है
रूप, भाग्य और स्वभाव
तीन चीजों पर अभिमान मत करो
धन, ताकत और सुन्दरता
तीन चीजें अगर चली गयी तो कभी वापस नहीं आती
समय, शब्द और अवसर
तीन चीजें इंसान कभी नहीं खो सकता
शान्ति, आशा और ईमानदारी
तीन चीजें जो सबसे अमूल्य है
प्यार, आत्मविश्वास और सच्चा मित्र

*****

कृत्रिम सुख की बजाये ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये.

– अब्दुल कलाम

पिता

श्री एस॰ के॰ तपादार
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

पिता का शर्ट सामान्यतः माँ के साड़ी से ज्यादा कीमत का नहीं होता है। पिता का वार्ड शर्ट–पैन्ट से भरा हुआ नहीं होता है। पिता का जूता सालों साल चलता है। मोबाईल सम्पूर्ण रूप से खराब नहीं होने तक बदलते नहीं है। घड़ी की हालत जर्जर हो जाती है, तब भी पहने ही रहते हैं। अकेला खाने के समय सबसे सस्ता होटल खोजते हैं। अकेला कहीं जाने के लिए बस से जाते हैं। धूप और वर्षा में भी केवल रूपया इकट्ठा करने में लगे रहते हैं।

लेकिन स्त्री और संतान के लिए सबसे ज्यादा दाम का सामान खरीद देते हैं। अपने लिए सबसे कंजूस पिता अपने स्त्री और संतान के लिए बहुत ही खर्चीला होता है। काफी हद तक पिता ही प्यार का शब्द बोलना जानते है। पिता ही सारा जीवन अपने हिस्से का विलासिता सम्बंधी वस्तुओं को त्याग कर अपने स्त्री और संतान के लिए यथासम्भव विलासिता सम्बंधी सामान खरीदते हैं।

पृथ्वी पर अनेक खराब पुरूष और खराब जन्मदाता हैं लेकिन एक भी खराब पिता नहीं है।

पिता धर्म, पिता कर्म, पिता ही परमन्तः परमं तपः
पितरी प्रलभाषणे, प्रियन्ते सर्वदेवबल्लभः।

*****

बायोमैट्रिक अटेन्डेन्स सिस्टम

श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

मुबारक हो केन्द्र सरकार ने *BAS*, लॉन्च किया है ।
सभी लेट–लतीफों को सुधारने का प्रबन्ध किया है ।।

पर भई ये *BAS*, है क्या ?
BAS माने बायोमैट्रिक अटेन्डेन्स सिस्टम,
सभी आएंगे समय पर, मिलेगी छूट 10 मिनट मैक्सिमम ।

मोदी जी ने *BAS* की महिमा, बहुत खूब पहचाना।
सभी समय पर आएंगे, संकल्प यही मन में ठाना।।
पर *BAS* की महिमा भी खूब निराली है।
कोई किस्मत पर रोवे तो, हर रोज कहीं दिवाली है।।

सक्सेना जी जो निरे, निखट्टू कामचोर थे, उनके पौ भी बारह हैं।
हर वर्ष बेस्ट इम्प्लॉयी का तमगा पाने वाले, सिन्हा जी ऑफिसियली नौ–दो ग्यारह हैं।।
सक्सेना जी सबसे कहते फिरते, और किसी में दम है क्या,
मैं ससमय ऑफिस आता हूं, बोलो काम यही कम है क्या,

सक्सेना जी मोदी गान करते नहीं थकते, जो कल तक थे पक्के कांग्रेसी।
बेस्ट इम्प्लॉयी बनूंगा मैं तो, होगी पूरी लालसा ऐसी ?

जो दिन भर मेहनत करते, दिन–प्रतिदिन वर्कलोड से दबते।
व्यथा–कथा ना किसी से कहते, सबकी सुनते सबकुछ सहते।।
जो ढंका–छुपा था अंतर में, अब वो व्यथा कथा कहनी होगी।
सक्सेना जी जैसे लोगों से, क्या उनकी समता होगी ?
अब आगे और कहूं क्या, मैं तो खुद हूं एक भुक्त–भोगी ।।

BAS की महिमा देख कर सोचे, अब तो प्रतिपल यही शुभेश,
सक्सेना, सिन्हा, चटर्जी, बनर्जी सबकी खतम हो गई ऐश।।

*****

मेरा नया बचपन

श्री ओम प्रकाश रॉय
खलासी, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी॥
चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी॥
किये दूध के कुल्ले मैंने चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी किल्लोल मचाकर सूना घर आबाद किया॥
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती-से आँसू जयमाला पहनाते थे॥
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़-पोंछ कर चूम-चूम कर गीले गालों को सुखा दिया॥
दादा ने चंदा दिखलाया नेत्र नीर-युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देख कर सबके चेहरे चमक उठे॥
वह सुख का साम्राज्य छोड़कर मैं मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई-सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई॥
लाजभरी आँखें थीं मेरी मन में उमँग रँगीली थी।
तान रसीली थी कानों में चंचल छैल छबीली थी॥
दिल में एक चुभन-सी थी यह दुनिया अलबेली थी।
मन में एक पहेली थी मैं सब के बीच अकेली थी॥
मिला, खोजती थी जिसको हे बचपन! ठगा दिया तूने।
अरे! जवानी के फंदे में मुझको फँसा दिया तूने॥
सब गलियाँ उसकी भी देखीं उसकी खुशियाँ न्यारी हैं।
प्यारी, प्रीतम की रँग-रलियों की स्मृतियाँ भी प्यारी हैं॥
माना मैंने युवा-काल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है॥
किंतु यहां झंझट है भारी युद्ध-क्षेत्र संसार बना।
चिंता के चक्कर में पड़कर जीवन भी है भार बना॥

आ जा बचपन! एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली वह अपनी प्राकृत विश्रांति॥
वह भोली-सी मधुर सरलता वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा तू मेरे मन का संताप
मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी॥
माँ ओ कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आयी थी।
कुछ मुँह में कुछ लिये हाथ में मुझे खिलाने लायी थी॥
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतुहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा विजय-गर्व था झलक रहा॥
मैंने पूछा यह क्या लायीबोल उठी वह माँ, काओ।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैंने कहा - तुम्हीं खाओ॥
पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर मुझ में नवजीवन आया॥
मैं भी उसके साथ खेलती खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ॥
जिसे खोजती थी बरसों से अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया॥

(साभार प्रस्तुति)

*****

राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम् , शिवम्, सुन्दरम् से प्रेरित है।

-सुभाष चंद्र बोस

मैं चाहता हूं

श्री नब कुमार पाल
अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

जिस राह जाना मुश्किल हो,
मैं वही राह जाना चाहता हूं।
जो काम करना मुश्किल हो,
मैं वही काम करना चाहता हूं।।

जो बात हमेशा बोला नहीं जाता,
मैं वही बात बोलना चाहता हूं।
जिस हालात में रोना आता है,
मैं उस हालात में हँसना चाहता हूं।।

जिसका कोई सहारा नहीं,
मैं उसका सहारा बनना चाहता हूं।
बेसहारा, दलितों के साथ रहकर,
मैं अनन्तकाल जीना चाहता हूं।।

पृथ्वी की सुन्दरता में, सबके प्यार में
मैं अमर रहना चाहता हूं।।

*****

प्रशंसा वह हथियार है, जिससे शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है।
– स्वामी दयानन्द सरस्वती

माँ

सुश्री दितीप्रिया गांगुली
सुपुत्री श्री समीर गांगुली, सहायक प्रबन्धक, पूर्वी मुद्रण वर्ग

माँ

प्यार का अथाह सागर है- माँ
जिन्दगी की छलकती गागर है - माँ
जिन्दगी संवारती है- माँ
जिन्दगी निखारती है- माँ
बचपन का मनभावन उपवन है -माँ
उम्रभर का सिलसिला है - माँ
सपनों का सुंदर गाँव है - माँ
मेरे लिए जमी-आसमाँ है- माँ
माँ न होती तो कुछ भी न होता
खुदा से पहले और खुदा के बाद है- माँ, माँ, माँ

*****

निश्चय

निश्चय हमारा द्दढ है , हम मेहनत करते जायेंगे।
चाहे कितनी भी बाधाएं आएँ, हम सदा मुस्कुराएंगे हमको डरा न पाएंगे।
तेज तुफानो में भी सदा मशालें हम जगमगाएंगे
विपत्ति और संकटों को भी ,हम धुल सा उड़ाते जाएंगे।
कठिन से कठिन डगर में भी ,हम आगे बढ़ते जायेंगे।
रुकने का नाम तो दूर ,मंजिल से पहले हम कभी न सुस्ताएंगे।
कांटो भरी राह में भी, हम मेहनत के फुल खिलाएंगे।
रात्री की कुचाल को भी , हम अपना सन्मार्ग बनाएंगे।
निश्चय हमारा द्दढ है,हम आगे बढ़ते जाएंगे।

*****

मुझको सरकार बनाने दो

श्री कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

जो बुड्ढे–खूसट नेता हैं, उनको खड्डे में जाने दो
बस एक बार, बस एक बार मुझको सरकार बनाने दो
मेरे भाषण के डंडे से, भागेगा भूत गरीबी का
मेरे वक्तव्य सुनें तो, झगड़ा मिटे मियां और बीवी का
मेरे आश्वासन के टॉनिक का एक डोज मिल जाए अगर
चंदगी राम को करे चित्त, पेशेंट पुराने टी बी का
मरियल सी जनता को मीठे वादों का जूस पिलाने दो
बस एक बार मुझको...

जो कत्ल किसी का कर देगा, मैं उसको बरी करा दूंगा
हर घिसी–पिटी हिरोइन की, प्लास्टिक सर्जरी करा दूंगा
लड़के–लड़की और लेक्चरार, सब फिल्मी गाने गाएंगे
हर कॉलेज में सब्जेक्ट फिल्म का कंपल्सरी करा दूंगा
हिस्ट्री और बीज गणित जैसे विषयों पर बैन लगाने दो
बस एक बार मुझको...

जो बिल्कुल फक्कड़ हैं, उनको राशन उधार तुलवा दूंगा
जो लोग पियक्कड़ हैं, उनके घर में ठेके खुलवा दूंगा
सरकारी अस्पताल मे जिस रोगी को मिल न सका बिस्तर
घर उसकी नब्ज छूटते ही मैं एम्बुलेंस भिजवा दूंगा
मैं जनसेवक हूं, मुझको भी थोड़ा सा पुण्य कमाने दो
बस एक बार मुझको...

(साभार प्रस्तुति)

*****

योग का महत्व

श्री हंसराज सोनकर
प्रबन्धक (वरिष्ठ), पूर्वी मुद्रण वर्ग

प्राचीन युग में योग का बहुत महत्व था। ऋषि ‘मुनि योग के बल पर अपना जीवन स्वस्थ रखते थे। योग ऐसी विधा है जिसमे सभी ‘कुछ पाया जाता है। योग का शाब्दिक अर्थ जुड़ना ,मिलना व संयोजन है। सृष्टि का ही प्रारम्भ मिलन या योग से ही हुआ है और संहार भी योग से होता है। ज्योतिष शास्त्र की माला में एक देखने की दृष्टि है की फलाना व्यक्ति की कुंडली में क्या योग है जैसे विवाह योग, राज योग, सन्तान योग और विधुर-विधवा योग पर नवग्रहों के प्रभाव के आकलन को करता हुआ सभी तरह के योगों को स्पष्ट करता है।

भारतवर्ष में योग के प्राचीन सिद्धहस्त योगी गुरु गोरखनाथ जी व महर्षि पतंजली (जो योग सूत्र के रचियता) व अनेकों सिद्ध योगियों के द्वारा योग के महत्व को स्वीकारते हुवे मानव को श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। योग का प्रभाव शरीर के शारीरिक स्तर, भौतिक स्तर एवं अध्यात्मिक स्तर पर पड़ता है। आइए हम इन स्तरों को समझते हुए यह जानेगे की इनका मानव जीवन पर क्या महत्व है।

हमारे इकाई शरीर में एक भाग भौतिक स्तर है जो दिखाई देता है. परन्तु दूसरा भाग अध्यात्मिक स्तर है जो दिखाई नहीं देता। यही दो भागों के सम्मिश्रण से हमारे शरीर का संतुलन बना रहता है तभी जीवन की गति नियमितता के साथ बढती है। यही सम्मिश्रण के उच्च नीच होने से संतुलन बिगड़ जाना व्यक्ति का भौतिकवादी होना और जीवन के महत्व को नहीं समझना ,फिर वह आध्यात्मवादी होकर भौतिक वस्तुओं के महत्व को अनदेखी करने लगता है। जबकि जीवन बिताने के लिए भौतिक वस्तुओं का भी महत्व है।

शरीर के माध्यम से योग किया जाता है। इसमें स्थूल एवं सूक्ष्म का का मिलन होता है। जीवन खाने पीने के पदार्थ जो भौतिक में आते हैं, ग्रहण करता है तथा नहीं दिखने वाला जैसे हवा को ग्रहण करता है इन दोनों के मिलन से जीवन की नैया आगे बढती है। यही मिलना योग कहलाता है।
आजकल के युग के भागती व व्यस्तता जीवन में योग का और भी महत्व बढ़ गया है। योग सभी मानव जाती के लिए कल्याणकारी है, प्राणायम जो की वायु से सबंधित योग है जिसे सभी मानव जाती करते हैं। अतः निरोग रहने के लिए एवं श्रेष्ठ जीवन यापन करने के लिए प्राणायम की प्रक्रिया को अपनाए और इसको करते हुवे योग के मार्ग पर बढें। अब इसके महत्व को विश्व भर के लोग भी समझने लगे है, अतः 21 **जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस** भी घोषित कर दिया गया है।

*****

रिश्ता–नाता

श्री तारेश्वर दास
मुख्य मानचित्रकार, पूर्वी मुद्रण वर्ग

समझ में नहीं आता ये रिश्ता ये नाता
कहां से ये हुआ शुरूआत? कोई हमें समझा देता, क्या है ये रिश्ता–नाता।
मां की कोख से जन्म हुआ, न समझ के भी मां बोल उठा
वो था अस्पष्ट शब्द की बोली, परन्तु माँ समझती थी,
'मेरा धन है भूखा' बोल के दूध पिलाती थी
कहीं दूर से माँ के आने की आहट महसूस होता तो मैं चुप होकर उसी ओर ताकता
वो (माँ) गोद में उठाती तो मैं उन्हें देखता रह जाता।
उनकी गोद में शान्ति से सो जाता, जहां मुझे कोई डर भय का एहसास नहीं होता
मैं बेजुबान था, तो भी न जाने क्यों एक आदमी को देखकर मुझे बहुत आनन्द आता?
"आ–आ" बोलने से मैं उछलकर उनकी गोद में समा जाता,
मेरे नन्हें–नन्हें हाथों से उनके तन बदन को छू लेता और मुस्करा भी देता ।
"तभी माँ बताती – ये तुम्हारा पिता"
न जाने ये कैसा रिश्ता – नाता ?
जब मैं गोद छोड़कर जमीन को अपनाता पेट के बल पर आगे बढ़ने लग जाता ।
कभी जमीन पर उल्टा सो जाता ।
न जाने क्यूं ? धरती के साथ क्या है मेरा रिश्ता – नाता ?

*****

> व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है.
>
> \- महात्मा गांधी

सुख–दुःख

श्री शुभेश कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

ज्यों दुःख है, तो ही सुख, सुख है।
सुख के लिए दुःख का होना बहुत जरूरी है ॥

बिना धूप के छाँव का आस्तित्व ही क्या
अंधियारे के बिना उजाले का महत्व ही क्या।
गोरे हैं तब ही जब काले हैं
कहीं उदासी है फिर तब चित्त मतवाले हैं ॥

जब जग में सब सुन्दर ही होते
कोई सुन्दर नहीं कहीं पर होते फिर।
क्या होता जब दिवस'दिवस ही रहता केवल
नहीं अंधियारी रैना की क्या कोई जरूरत?

है कुरूपता से परिभाषा सुन्दर की
भेद यहीं से मिलता है नारी'नर की।
ज्यों अपंगता है जग में तन सुन्दर है
कहीं खुरदुरे श्यामल चेहरे, कहीं पर छवि मनोहर है ॥

कहीं लालच है, कामुकता है, फिर कहीं ईमानदारी है, वैराग्य है।
कहीं निर्धनता है, व्याधि है, तो कहीं अमीरी है, आरोग्य है ॥

यदि है क्रोधी कोई मोही, तब ही शांत चित्त निर्मोही।
अन्याय नहीं फिर न्याय ही कैसा, जैसे पुण्य पाप बिनु वैसा ॥

अरे भगवान के अस्तित्व के लिए भी, शैतान का होना बहुत जरूरी है।
इसलिए ज्यों दुःख है, तो ही सुख, सुख है, सुख के लिए दुःख का होना बहुत जरूरी है ॥

जो आज दुःखी है, कल सुखी भी होगा
तम का सीना फाड़ सूरज निकलेगा।
तुम यत्न किन्तु बस इतना करना
नित कर्म किए जा और ईश चरण में ध्यान तुम धरना ॥

फिर 'शुभेश' सुख ही सुख का, रहेगा तेरे घर डेरा।
नहीं मिलेगी निशि अंधियारी, नहीं व्यापेगा तुझको कष्ट घनेरा ॥

*****

सुविचार

श्री रामकृष्ण मोरे
आर्टिफिसर, दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद

मिठास

1) मुंह में घुले तो "स्वाद", दिलों में घुले तो "प्यार"
मौसम में घुले तो "बहार", रिश्तों में घुले तो जिन्दगी बने सुचार

2) चिड़िया जब जीवित रहती है ,तब वो चींटी को खाती है
चिड़िया जब मर जाती है ,तब चीटियाँ उसको खा जाती है।

3) एक पत्थर सिर्फ एक बार मन्दिर जाता है और भगवान बन जाता है
इंसान हर रोज मन्दिर जाते है फिर भी पत्थर ही रहते हैं

4) एक औरत बेटे को जन्म देने के लिए अपनी सुन्दरता त्याग देती है
और वही बेटा एक सुंदर बीवी के लिए अपनी माँ को त्याग देता है।

5) इन्सान दुनिया में तीन चीजों के लिए मेहनत करता है।
1)मेरा नाम ऊँचा हो ,
2) मेरा लिबास अच्छा हो
3)मेरा मकान खूबसूरत हो

लेकिन इंसान के मरते ही भगवान उसकी तीनो चीजें सबसे पहले बदल देता है

1) नाम (स्वर्गीय)
2) लिबास (कफन)
3) मकान (श्मशान)

इसलिए इस बात पर ध्यान रखो की समय और स्थिति कभी भी बदल सकती है :-

@ इसलिए कभी किसी का अपमान मत करो।
@ कभी किसी को कम मत आंको।
@ तुम शक्तिशाली हो सकते हो पर समय तुमसे भी शक्तिशाली है।
@ एक पेड़ से लाखों माचिस की तिल्लियां बनाई जा सकती है।
@पर एक माचिस की तिल्ली से लाखों पेड़ भी जल सकते हैं।
@कंठ दिया कोयल की ,तो रूप छीन लिया।
@रूप दिय मोर को ,तो इच्छा छीन लिया।
@दी इच्छा इंसान को ,तो संतोष छीन लिया।
@ भगवान ने तेरे और मेरे जैसे कितनो को मिटटी से बना के , मिटटी में मिला दिया।

*****

स्वच्छ भारत गढ़े

श्री शांति दास
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

आओ प्यारे हम स्वच्छ भारत गढ़े,
घर से और बाहर से कचरा साफ करें ।
पथ से और पानी से दूषण दूर करें,
आओ प्यारे हम स्वच्छ भारत गढ़े, ।।

दिल से और दिमाग से दुश्मनी विदा करें,
ताकत से और तमन्ना से डर दूर करें ।
बुद्धि से और विकास से देश को उन्नत करें,
आओ प्यारे हम स्वच्छ भारत गढ़े ।।

काम में और कारोबार में अवहेलना ना करें,
मेहनत से और सच्चाई से देश का भण्डार भरें ।
शिक्षा से और चेतना से देश को रौशन करें,
आओ प्यारे हम स्वच्छ भारत गढ़े ।।

बेटे और बेटियों में अंतर ना करें,
ऊंच–नीच में भेद–भाव ना करें ।
हिन्दुओं और मुसलमानों को अलग ना करें,
आओ प्यारे हम स्वच्छ भारत गढ़े ।।

दुर्नीति से और दुश्मन से देश को दूर रखें,
आओ प्यारे हम भारत माता की जय पुकारें ।
आओ प्यारे हम भारत मुल्क की जय पुकारें,
आओ प्यारे हम स्वच्छ भारत गढ़े ।।

*****

सर्वे टीम से जुड़ी छोटी घटनाएं

श्री सुदीप्त कांजीलाल
सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

सर्वे टीम के जाने के बाद, बच्चे उनका जगह ले लेते हैं :–

मिदनापुर जिले के नन्दीग्राम के नजदीक के एक गाँव के बच्चों ने (सर्वे वर्ष 2010–11) सर्वे टीम के जाने के बाद लेवलिंग मशीन, स्टाफ, जी.पी.एस. रिसीवर आदि बनाकर अपनी कुशलता दर्शाया जिसमें बोतल, बांस, ईंट, रस्सी आदि का इस्तेमाल किया गया था। क्या और एक राधानाथ सिकदर बन रहा है ? राधानाथ सिकदर सर्वे ऑफ इण्डिया के ट्रीग कम्प्यूटर थे।

एक स्थानीय ग्राम का आदमी (रमेश)–महाशय, क्या आप मेरे जमीन के विवाद को ठीक कर सकते हैं ? :–

जब सर्वे टीम गाँवों में सड़कों के किनारे काम करती है, तो लोग यह सोचते हैं कि नया सड़क बनेगा। इसी तरह नहरों, बांधों आदि के पास काम करने पर भी लोग सोचते हैं कि नहरों को ठीक किया जाएगा। एक बार एक सर्वे टीम बिहार के मोतीपुर के गाँव के नजदीक कैंप किये हुए थे। रमेश ने सोचा कि वो लोग अमीन हैं। तो रमेश ने, चुपचाप सुबह 5:25 बजे सर्वेक्षक के तम्बू में अपना सिर घुसा कर अन्दर झांकने लगा और उनसे अपने जमीन के विवाद को ठीक करने की विनती करने लगा। सर्वेक्षक इसके लिए तैयार नहीं था। वह अपनी पुरी कोशिश उसे समझाने का किया की जमीन का विवाद सुलझाना उसका काम नहीं है।

नया कैम्प खलासी, महेश –"मैं रात को सो नहीं पाया सर। यह पहाड़ किसी भी समय गिर सकता है सर :–

सिक्किम पहाड़ों का प्रदेश है। ज्यादा ऊंचाई, ठंढ, घने जंगल कभी–कभी चीजों को खराब बना देती है। एक सर्वेक्षक को बहुत साहस की जरूरत पड़ती है जब वे सर्वे का काम करते हैं। वर्ष 2003–04 में एक नया कैम्प ख़लासी (महेश) एक सर्वेक्षक के साथ सिक्किम में आया हुआ था, लेकिन महेश वहां सो नहीं पा रहा था। क्योंकि उसे डर था कि कभी भी पहाड़ गिर पड़ेगा। एक दिन सुबह वह कैम्प से भाग गया।

जीरो लाईन को कौन राज करता है :–

अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास लोहे के जाले देखते हैं, यह असली सीमा नहीं है। हजारों मेन पिलर्स और सब्सिडियरी पिलर्स अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर हैं। अगर हम इस पिलर को एक रेखा से जोड़ें तो वह रेखा जीरो लाईन कहलाएगा। 450 फीट दोनों तरफ "नो मेन्स लैण्ड" कहलाता है। अंतर्राष्ट्रीय समझौता के अनुसार कोई भी देश यहां रास्ता फौजी कैम्प आदि नहीं बना सकता। भारत ने हजारों किलोमीटर लोहे की जाली बनाई है। लोग जो इस जमीन के मालिक होते हैं वह अपना परियच पत्र दिखाने के बाद यहां खेती का काम करते हैं। नहीं तो लोहे का गेट बंद रहता है और घनी पहरेदारी की जाती है, लेकिन सवाल यह है कि जीरो लाईन को कौन राज करता है? दोनों देशों के सर्वे टीम इस रेखा को बहुत सारे गणित का सूत्र, सर्वे मशीन से निरीक्षण और बात–चीत करने के बाद जीरो लाईन को जमीन पर चिन्हित करते हैं।

******

हमारे देश के गाँव और शहरों के असली नाम

श्री देव नारायण सिंह
अभिलेखपाल डिवि.– I, पूर्वी मुद्रण वर्ग

वर्तमान नाम	–	असली नाम
1. हिन्दुस्तान, इण्डिया या भारत	–	आर्यावर्त
2. कानपुर	–	कान्हापुर
3. दिल्ली	–	इन्द्रप्रस्थ
4. हैदराबाद	–	भाग्यनगर
5. इलाहाबाद	–	प्रयाग
6. औरंगाबाद	–	संभाजीनगर
7. भोपाल	–	भोजपाल
8. लखनऊ	–	लक्ष्मणपुरी
9. अहमदाबाद	–	कर्णावती
10. फैजाबाद	–	अवध
11. अलीगढ़	–	हरिगढ़
12. मिराज	–	शिव प्रदेश
13. मुजफ्फरनगर	–	लक्ष्मीनगर
14. शामली	–	श्यामली
15. रोहतक	–	रोहितासपुर
16. पोरबन्दर	–	सुदामापुरी
17. पटना	–	पाटलिपुत्र
18. नांदेड	–	नंदीग्राम
19. आजमगढ़	–	आर्यनगर
20. अजमेर	–	अजयमेरू
21. उज्जैन	–	अवन्तिका
22. जमशेदपुर	–	काली माटी
23. विशाखापत्तनम	–	विजात्रापश्म
24. गुवाहाटी	–	गौहाटी
25. बुरहानपुर	–	ब्रहनपुर
26. इंदौर	–	इन्दुर
27. नशरूलागंज	–	भीरूंपा
28. सोनीपत	–	स्वर्णप्रस्थ
29. पानीपत	–	पर्णप्रस्थ
30. बागपत	–	बागप्रस्थ
31. उसमानाबाद	–	धाराशिव (महाराष्ट्र)
32. देवरिया	–	देवपुरी
33. सुल्तानपुर	–	कुशभवनपुर
34. लखीमपुर	–	लक्ष्मीपुर

(संकलित)

*****

कार्यालयीनं हिन्दी के वाक्य सांचे

श्री आशीष कौशल
निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग

कर्म सं०	ENGLISH	हिंदी
1)	Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
2)	Action has already been taken in the matter	इस मामले में कारवाई की जा चुकी है
3)	Action has not yet been initiated	कारवाई अभी शुरू नहीं की गई है
4)	Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कारवाई की जाए।
5)	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
6)	Application may be rejected	आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए।
7)	Call for an explanation	स्पष्टीकरण माँगा जाए।
8)	Charge handed over	कार्यभार सौंप दिया।
9)	Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है।
10)	Consolidated report may be furnished	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।
11)	Day to day administrative work	दैनिक प्रशासनिक कार्य।
12)	Delay in returning the file is regretted	फ़ाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
13)	Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
14)	Draft has been amended accordingly	प्रारूप तदनुसार संशोधित क्र दिया गया है।
15)	Draft may now be issued	प्रारूप अब जारी कर दिया जाए।
16)	Draft reply is put up for approval	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
17)	Explanation may be called for	स्पष्टीकरण माँगा जाए।
18)	For sympathetic consideration	सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए
19)	I have been directed to inform you/request you /ask you	मुझे निर्देश हुआ है कि मै आपको सूचित करूं/आपसे निवेदन करूं/आपसे पूछूं।
20)	I have the honour to say	सादर निवेदन है।
21)	Issue as amended	यथा संशोधित भेज दें।
22)	Issue reminder urgently	तुरंत अनुस्मारक भेजें।
23)	Issue today	आज ही भेजें।

24)	Kindly acknowledge	कृपया पावती भेजें।
25)	May be informed accordingly	तदनुसार सूचित कर दिया जाए।
26)	Needful has been done	जरूरी कार्रवाई कर दी गई है।
27)	No decision has so far been taken in the matter	इस मामले पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है
28)	No further action is required	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
29)	Please circulate and file	कृपया अभी को दिखाकर फ़ाइल कर दें।
30)	Please speak	कृपया बात करें।
31)	Seen and returned with thanks	देखकर सधन्यवाद वापस किया जा सकता।
32)	The case is re-submitted	प्रकरण फिर से प्रस्तुत किया जाता है।
33)	The proposal is self explanatory	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।
34)	The required papers are placed below	अपेक्षित कागज पत्र नीचे है।
35)	This may be treated as urgent	कृपया इसे अविलंबनीय समझें।
36)	Received payment of balance int. due	ब्याज की शेष राशि प्राप्त की।

*****

उस व्यक्ति ने अमरत्त्व प्राप्त कर लिया है, जो किसी सांसारिक वस्तु से व्याकुल नहीं होता.

\- स्वामी विवेकानंद

राजभाषा कार्यान्वयन सम्बंधी जांच–बिन्दु

श्री हंसराज सोनकर
प्रबन्धक (वरिष्ठ), पूर्वी मुद्रण वर्ग

1.हिंदी में प्राप्त या हस्ताक्षरित पत्रों का उत्तर केवलहिंदी में दें या भेजें।	11.सभी बैनर त्रिभाषी (क्षेत्रीय भाषा,हिंदी एवं अंग्रेजी) में प्रदर्शित किये जाएँ।
2. सामान्य आदेश, परिपत्र,अखिल भारतीय स्तर पर विज्ञापन,सुचना,नियम इत्यादि सभी कागजात द्विभाषी अर्थात हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करें।	12.कार्यालय में प्रयोग होने वाले सभी लिफाफों,बिल, रसीद ,वाउचर,प्रमाण पत्र तथा लोगों का नाम एवं पता हिंदी- अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराएं।
3. भारत सरकार के विभागों को भेजे जाने वाले सभी प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन हिंदी में तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में भेजें।	13.कार्यालय के सभी नाम पट्ट,साइन बोर्ड,सूचनाबोर्ड और अन्य इसी तरह के बोर्ड क्षेत्रीय भाषा, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में लिखायें और भाषाओं का क्रम क्षेत्रीय भाषा ,हिंदी और अंग्रेजी होना चाहिए तथा तीनो भाषाओं के अक्षरों का आकार समान होना आवश्यक है।
4.क्षेत्र क, क और ख को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफ़ाफ़ों पर पता केवल हिंदी में ही लिखें।	14.वाहनों पर भी कम्पनी का नाम,लोगो सहित हिंदी अंग्रेजी दोनों भषाओं और अंग्रेजी दोनों भषाओं में लिखवाएँ।
5. कार्यालयों में आयोजित प्रत्येक बैठक की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त द्विभाषी (हिंदी-अंगेजी) में तैयार करें।	15 जिन कर्मचारियों के पास हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है उन्हें हिंदी शिक्षण योजना द्वारा संचालित कक्षाओं या हिंदी पत्राचार पाठ्यक्रम की कक्षाओं, प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ में नामंकित करें।
६. हिंदी में मूल पत्राचार को बढ़ाने के लिए कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय किया जाय।	16 केवल अंग्रेजी टंकण तथा अंग्रेजी आशुलिपि का ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों को हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिए हिंदी शिक्षण योजना द्वारा संचालित कक्षाओं में भेजें।
7. मैनुअल हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार करें।	17 जिन कर्मचारियों के पास हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है, उन्हें हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रशिक्षण के लिए हिंदी कार्यशालाओं में नामांकित करें।
8. सभी समारोहों के निमंत्रण पत्र हिंदी एवं अंग्रेजी में मुद्रित कराएं	18 राजभाषा कार्यान्वयन को सभी प्रकार के विभागीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में एक विषय के रुप में शामिल करें।

९. कार्यालय में प्रयोग होने वाले सभी पत्रशीर्ष,फ़ार्म, रजिस्टर, फाइलें, आगन्तुकपत्र, पहचान-पत्र, एवं इसी तरह की सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित कराएं।	19 प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया जाए।
10. प्रचार-प्रसार के लिए प्रयोग आने वाले पोस्टर, स्टिकर आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित कराएं।	

*****

> मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है. सत्य मेरा भगवान है, अहिंसा उसे पाने का साधन.
>
> - महात्मा गांधी

भारतीय सर्वेक्षण विभाग– एक संक्षिप्त परिचय

(250 गौरवशाली वर्ष)

श्री ओमप्रकाश रॉय
खलासी, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, विज्ञान एवम् प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विज्ञान एवम् प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत कार्यरत भारत सरकार का सबसे पुराना वैज्ञानिक विभाग है। इसकी स्थापना 1767 ईस्वी में हुई थी। विभाग का मौजूदा स्वरूप ट्रिगोनोमेट्रीकल सर्वे, रेवेन्यू सर्वे और मैपिंग सर्वे के संयोग से आस्तित्व में आया है।

भारत के पहले सर्वेयर जनरल कर्नल कॉलिन मैकेन्जी थे। जॉर्ज एवरेस्ट जिन्होंने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी की ऊंचाई मापी और उन्हीं के नाम पर उस चोटी का नाम माउंट एवरेस्ट रखा गया, उन्होंने भी इस विभाग में सर्वेयर जनरल के रूप में योगदान दिया (कार्यकाल – 1830 से 1843)।

देश के मुख्य अधिकृत मैपिंग एजेंसी के रूप में यह विभाग प्रशंसनीय भूमिका निभाता आ रहा है। विभाग का स्लोगन "वी नो इवरी इंच ऑफ दी नेशन" स्वतः इस विभाग के महत्व को परिलक्षित करता है। यह भारत–भूमि के आधार मानचित्रण कर सुनिश्चित करता है कि सभी संसाधनों का उपयोग देश की प्रगति, उन्नति और सुरक्षा के लिए हो।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का मुख्यालय देहरादून में अवस्थित है। यह आठ जोनल कार्यालयों मे बंटा हुआ है, जिसके अधीन 22 भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा निदेशालय, चार प्रिंटिंग समूह व छः विशिष्ट निदेशालय कार्यरत है।

संक्षिप्त इतिहास :

1767 में मेजर जेम्स रेनेल बंगाल के प्रथम महासर्वेक्षक नियुक्त हुए। 1796 में लेफ्टिनेन्ट जेनरल चार्ल्स रेनॉल्ड्स बम्बई के प्रथम महासर्वेक्षक नियुक्त किये गए तथा 1810 में कर्नल कॉलिन मैकेन्जी मद्रास के एकमात्र महासर्वेक्षक नियुक्त हुए जो आगे चलकर 1815 में भारत के प्रथम महासर्वेक्षक बने। कर्नल मैकेंजी का पहला कार्य भारत का प्रामाणिक मानचित्र तैयार करना था। 1830 से 1861 ई. और 1878 से 1883 ई. तक भारत का महासर्वेक्षक ही त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण का अधीक्षक था, यद्यपि यह एक स्वतंत्र विभाग बना रहा। भारत का चौथाई इंच ऐटलस चालू होने पर लगभग 1825 ई. में भारत का मानचित्र सामने आया और इस माला का पहला नक्शा 1827 ई. में मुद्रित हुआ। यह नक्शा केवल महान त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण के आधार पर ही बना और लंदन में संकलित तथा उत्कीर्ण हुआ। इस ऐटलस में 1868 ई. तक, जब उत्कीर्णन भारत में होने लगा, देश के आधे से अधिक भाग के मानचित्रों को प्रदर्शित कर दिया गया था। इस ऐटलस का कार्य 1905 ई. तक

आगे बढ़ता रहा। पर 1905 ई. में इंच अंश मानचित्रों के एक नए विन्यास और एक इंच नक्शों की लगातार मालाओं ने पुराने मानचित्रों का स्थान ले लिया।

विभाग के प्रमुख कार्यकलाप

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सभी सर्वेक्षण कार्यो अर्थात ज्योडेसी, फोटोग्राममिति, मानचित्रण और पुनरूत्पादन पर भारत सरकार के सलाहकार के रूप में कार्य कर रहा है। तथापि भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मुख्य कार्य और उत्तरदायित्व निम्न हैं-
सभी ज्योडीय नियंत्रण (क्षैतिज और उर्ध्वाधर) ज्योडीय और भू-भौतिकीय।

भारत के अन्तर्गत सभी स्थलाकृतिक नियंत्रण, सर्वेक्षण और मानचित्रण।

भौगोलिक मानचित्रों और वैमानिकीय चार्टों का मानचित्रण और उत्पादन।

विकासात्मक परियोजनाओं का सर्वेक्षण।

बड़े पैमाने के नगरों, मार्गदर्शी मानचित्र और भू-कर (कैडेस्ट्रल) सर्वेक्षण इत्यादि।

विशेष उददेश्यों वाले मानचित्रों का सर्वेक्षण और मानचित्रण।

भौगोलिक नामों की वर्तनी (स्पैलिंग्स) सुनिश्चित करना।

भारत गणराज्य की बाह्य सीमाओं का सीमांकन और देश में प्रकाशित मानचित्रों पर उनका चित्रण करना और अन्तर्राज्य सीमाओं के सीमांकन के संबंध में भी परामर्श देना।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों, अन्य केन्द्रीय और राज्य सरकार के कर्मचारियों तथा विदेशों से सर्वेक्षण एवं मानचित्रण की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आने वाले विद्यार्थीयों को प्रशिक्षण देना।

अंकीय मानचित्रण कला, मुद्रण, ज्योडेसी, फोटोग्राममिति, स्थलाकृतिक सर्वेक्षण का अनुसंधान और विकास करना तथा स्वदेशीकरण करना।

14 विदेशी बन्दरगाहों सहित 44 बन्दरगाहों पर ज्वार-भाटे से संबंधित भविष्यवाणी (पूर्वानुमान) करना और नौवहन कार्यकलापों की सहायता के लिए एक वर्षपहले ही ज्वार-भाटा तालिका प्रकाशित करना।

निजी प्रकाशकों सहित अन्य अभिकरणों द्वारा प्रकाशित मानचित्रों पर भारत गणराज्य की बाह्य सीमाओं और तटरेखाओं की संवीक्षा करना और प्रमाणित करना।

*****

विनम्रता से लाभ

श्री के. पी. मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक, पश्चिम बंगाल एवम् सिक्किम जीडीसी

"मनुष्य बली नहीं होत हैं, समय होत बलवान"

जो मनुष्य समय आने पर स्वयं से अधिक बलवान, सामर्थ्यवान के सामने झुक जाते हैं या समझौता करते हैं उनका कभी नुकसान नहीं होता। जो अकड़ते हैं उनका तो सर्वनाश ही हो जाता है।

एक समय की बात है नदियों के स्वामी समुद्र ने सभी नदियों से पूछा– नदियों, मैं देखता हूं कि जब बाढ़ आती है तो बड़े–बड़े वृक्ष जड़मूल सहित उखड़कर तुम्हारे साथ बह जाते हैं जबकि मैनें कभी भी बेंत को बहते हुए नहीं देखा। बेंत तो वृक्षों की अपेक्षा बहुत ही कमजोर होते हैं। फिर वे कैसे बच जाते हैं।

समुद्र के ऐसा पूछने पर नदियों ने कहा– स्वामी, ये वृक्ष अपने स्थान पर अकड़ कर खड़े रहते हैं और तेज धारा की मार से उखड़ जाते हैं जबकि बेंत तेज धारा के आने पर बिल्कुल झुक जाता है। धारा उसके ऊपर से निकल जाती है। बेंत अपनी जगह पर जस का तस खड़ा रहता है। उसकी विनम्रता के आगे हमारी तेज धारा ही हार मान लेती है। मनुष्य में भी जिसके पास विनम्रता जैसा गुण है, शत्रु भी उनका कुछ नुकसान नहीं कर सकते।

*****

वचनामृत

1. श्रद्धा ही वह तप है जिससे उन्नति की राह प्राप्त की जा सकती है।
2. हृदय सूई, बुद्धि कैंची। सूई जोड़ने का काम करती है कैंची काटने का। जीवन का निर्णय बुद्धि से नहीं हृदय से करना चाहिए।
3. पिता की आज्ञा हमारे मार्ग का दीपक है और माँ की शिक्षा जीवन की ज्योति।
4. घृणा सब अपराधों को जन्म देती है और प्रेम सब अपराधों को क्षमा कर देती है।
5. किसी के तरफ अगर एक अंगुली उठाओगे तो तुम्हारे तरफ तीन अंगुली उठेगी।
6. बिना ज्ञान के जीवन में परिवर्तन सम्भव नहीं है।
7. दृढ़ शक्ति से दुविधा की बेड़ियां स्वतः कट जाती है।
8. बलवान से बुद्धिमान और शक्तिमान से ज्ञानवान अधिक शक्तिशाली होता है।
9. नियम कैंदखाना नहीं है अपितु वह सुरक्षा का किला है।
10. संसार में माँ से बढ़कर कोई बड़ा गुरू नहीं है। पिता मार्गदर्शक है।

*****

समर्पण

उरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दुस्तां होगा,
रिहा सय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा ।

वतन की आबरू पर देखें पास कौन होता है
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तहां होगा ।।

कभी वो दिन भी आएगा, जब अपना राज देखेंगे
जब अपनी ही जमीं और अपना आसमां होगा ।।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा ।।

...... शहीद–ए–आजम भगत सिंह

***** इति शुभम् *****

भारत-बांग्लादेश के मध्य अंतराष्ट्रीय सीमा पर स्थित पिलरों का सर्वेक्षण अधिकारियों द्वारा संयुक निरीक्षण। स्थान: सीमा सशस्त्र बल शिविर, कमलपुर, त्रिपुरा, भारत।

भारत-बांग्लादेश सीमा पर संयुक्त सर्वेक्षण कार्य

भारत-बांग्लादेश सीमा का संयुक्त निरीक्षण

सर्किट हाउस, अगरतल्ला, त्रिपुरा

भारत-बांग्लादेश सीमा निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण

अपर महासवेक्षक, पूर्वी क्षेत्र द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी का उदघाटन

अधिकारियों द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी का अवलोकन

निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग द्वारा हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन

निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग द्वारा हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन संबोधन

निदेशक, पूर्वी मुद्रण वर्ग द्वारा हिन्दी कार्यशाला के व्याख्यान देते हुए

स्वच्छ भारत पखवाड़ा के अवसर पर अधिकारियों द्वारा स्वच्छता की शपथ

स्वच्छ भारत पखवाड़ा के दौरान आयोजित चित्रांकण प्रतियोगिता

स्वच्छ भारत पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का पुरस्कार बितरण

पूर्वी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र एवं पूर्वी मुद्रण वर्ग
के द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित